ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र

जुलाई २०१३

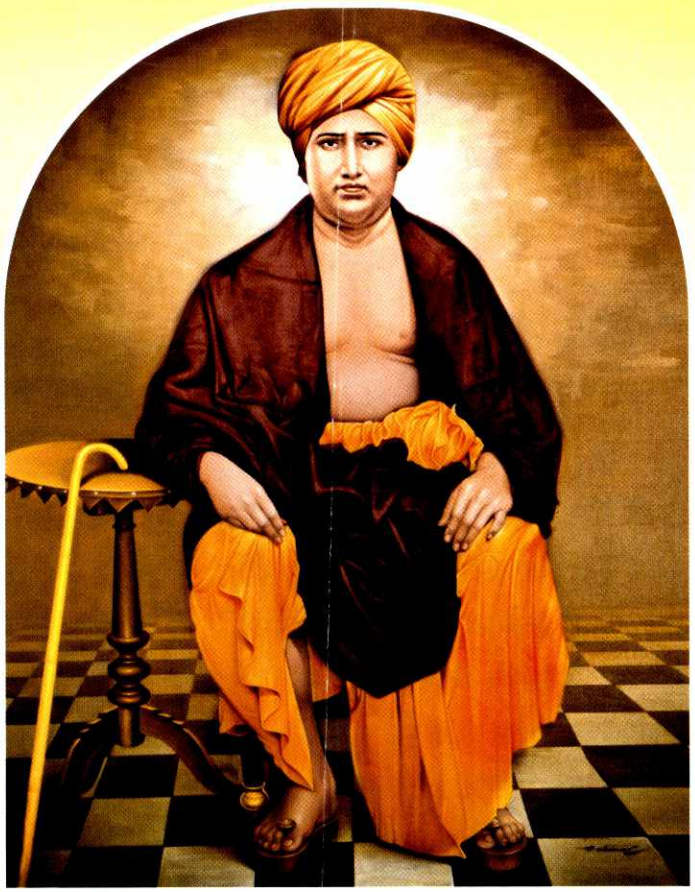

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का जबलपुर में अक्टूबर 1874 में खींचा गया चित्र

श्री महाशय भामराज जी आर्य (खितौली जि. मुजफ्फरनगर) द्वारा संकलित

कुरसी पर वस्त्र बैठे हुए – यह चित्र आश्विन सं. 1931 (अक्टूबर सन् 1874) में श्रीमान कृष्णराव जी गोलवलकर एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर जबलपुर ने ऋषि दयानन्द को अपने स्थान पर ले जाकर और अपने यहां से वस्त्र पहनाकर तथा कुरसी पर बैठाकर खिंचवाया था। इस चित्र में पास में टेबल के सहारे मुट्ठी की बैत रखी है। इस चित्र को श्री देवेन्द्र बाबू ने स्वयं वहां जाकर देखा था। देखो, उनके संकलित और आर्य साहित्य मण्डल अजमेर द्वारा प्रकाशित जीवन चरित्र पृष्ठ 281। इस चित्र का वास्तविक कांच का प्लेट उनके पुत्र मनोहर कृष्ण गोलवलकर ने आर्य समाज जबलपुर को सौं प दिया है। उसी प्लेट से उतारा हुआ चित्र मैंने 30 जनवरी 1944 को बाबू दीनानाथ चड्डा (इच्छरा लाहौर निवासी) जबलपुर वालों से रतनपुर (महाकोशल की प्राचीन ऐतिहासिक राजधानी) जि. बिलासपुर सी.पी. से विष्णु महायज्ञ तथा हिन्दु महासभा के अधिवेशन के अवसर पर प्राप्त किया था। इसी चित्र से बना हुआ चित्र 'दयानन्द स्मृतिग्रन्थ' में वैदिक यन्त्रालय अजमेर ने लगाया है।

युग के वेदों के महान विद्वान को वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर श्रद्धा सुमन अर्पित

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर बाजार, नागपुर (महाराष्ट्र)

वैदिक विनय

अभय देव विद्यालंकार

तेज धारण करें

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्॥ य. ३६। ३

ऋ. ३.६२.१०। यजु. ३.३५। साम. उ. ६.३.१०॥

- शब्दार्थ -

(सवितुः) प्रेरक उत्पादक (देवस्य) परमात्मदेव के (तत्) उस (वरेण्यं) वरने योग्य (भर्गः) शुद्ध तेज को (धीमहि) हम धारण करते हैं, ध्यान करते हैं (यः) जो धारण किया हुआ तेज (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को, कर्मों को (प्रचोदयात्) सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करता रहे।

विनय

तुझे क्या करना चाहिये क्या नहीं; यह मैं नहीं जानता। किस समय क्या कर्तव्य है क्या अकर्तव्य; क्या धर्म है क्या अधर्म ; यह मैं नहीं जान पाता। सुना है कि बड़े-बड़े ज्ञानी भी बहुत बार इस तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ रहते हैं। पर क्या इसका कोई इलाज नहीं है ?हे सवितः देव ! हमारे उत्पादक देव ! क्या तूने हमें उत्पन्न करके इस अंधेरे संसार में यों ही छोड़ दिया है ? कोई निर्भ्रान्त (निश्चित) प्रकाश हमारे लिये तुमने नहीं दिया है। यह कैसे हो सकता है ?नहीं, तुम अपने अनन्त प्रकाश के साथ सदा हमारे हो। यदि हम चाहें और यत्न करें, तो तुम हमें अपने प्रकाश से आप्लावित कर सकते हो। इसके लिये हम आज से ही यत्न करेंगे और तेरे उस 'भर्ग' (विशुद्ध तेज) को अपने में धारण करने लगेंगे जो कि वरणीय है, जिसे कि हर किसी को लेना चाहिये – जिसे कि प्रत्येक मनुष्य-जन्म पाने वाले को अपने अन्दर स्वीकार करने की जरूरत है। इस तेरे वरणीय शुद्ध स्वरूप का हम जितना श्रवण, मनन, निदिध्यासन करेंगे अर्थात् जितना तेरा कीर्तन सुनेंगे, तेरा विचार करेंगे, तेरे में मन एकाग्र करेंगे, तेरा जप करेंगे, तुझमें अपना प्रेम समर्पित करेंगे उतना ही तेरा शुद्ध स्वरूप हमारे अन्दर धारण होता जायगा। बस, यह ऊपर से आता हुआ तुम्हारा तेज ही हमारी बुद्धि को और फिर हमारे कर्मों को ठीक दिशा में प्रेरित करता रहेगा। इस शुद्ध स्वरूप के साथ तुम ही मेरे हृदय में बस जाओगे और तुम ही मेरे बुद्धि, मन आदि सहित इस शरीर के संचालक हो जाओगे। फिर धर्म अधर्म की उलझन कहाँ रहेगी ! तुम्हारे पवित्र संस्पर्श से इस शरीर की एक एक चेष्टा में शुद्ध धर्म की ही वर्षा होगी। इसलिए हे प्रभो ! हम आज से सदा तुम्हारे शुद्ध तेज को अपने में धारण करने में लगते हैं। एक एक मानसिक विचार के साथ, एक एक जप के साथ इस तेज का अपने अन्दर आह्वान करेंगे और इस तरह प्रतिदिन इस तेज को अपने में अधिक-अधिक एकत्र करते जायेंगे। निश्चय है कि इस 'भर्ग' की प्राप्ति के साथ-साथ धर्म के निश्चय में पटु होती जाती हुई हमारी बुद्धि एक दिन तुम्हारी सर्वज्ञता के कारण पूरी तरह बिल्कुल ठीक मार्ग पर ही चलने वाली हो जायगी।

'वेदाञ्जलि' से साभार

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११३ अंक ७
सृष्टि संवत १९६०८५३११४
दयानन्दाब्द - १८९
संवत - २०७०
सन - २०१३, जुलाई २०१३

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२५१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. नं. ०९३७३१२११६४

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो.नं. ०९४२४६८५०९१
निवास - 580, गुप्तेश्वर वार्ड, कृपाल चौक,
मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. नं. : ०९९७००८००७४

सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री
अशोक यादव, नागपुर
मो. नं. : ९३७३१२११६३

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर बाजार,
नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क्र. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ट क्र.
१.	वैदिक विनय	अभयदेव विद्यालंकार	२
२.	सम्पादकीय		४
३.	मुक्ति मार्ग का पथिक बनूँ	आचार्य बलदेव	६
४.	शारीरिक भाषा की	सत्यवीर शास्त्री	७
५.	ज्ञापन	आ.प्र.सभा म.प्र. व विदर्भ	९
६.	आर्य समाज मंदिर में विवाह....	आ.प्र.सभा म.प्र. व विदर्भ	१०
७.	कहो वेद हां या सहो वेदना	देव नारायण भारद्वाज	१२
८.	भारतीय संस्कृति के विनाश...	डा. गंगाशरण आर्य	१५
९.	काव्य सलिला - देश की सोचो	ओमप्रकाश बजाज	१७
१०.	आर्य समाज से सम्बंधित प्रमुख वेबसाइट		१८
११.	रोगमुक्ति की कहानी	राम सजीवन गुप्ता	१९
१२.	आर्य जगत के समाचार		२०
१३.	सभा क्षेत्र की सूचनाएं व समाचार		२२

'स्व' व 'पर' कुछ करने का अवसर

श्रावणी उपाकर्म, हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति दिवस तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी – वेद प्रचार सप्ताह 20 अगस्त से 28 अगस्त तक मनाने का अवसर आ गया है । कोई भी आयोजन हो, उसकी तैयारी करने में योजना बनाने में, मनः स्थिति बनाने का यदि सुनियोजित ढंग से कार्य किया जाए तो आयोजन की सफलता सुनिश्चित होती है । एक देढ़ महीने का समय है आइए इस पर कुछ विचार कर लेवें ।

श्रावणी उपाकर्म से चर्चा प्रारंभ करें । यज्ञोपवीत परिवर्तन तथा हमारे भविष्य के कर्णधारों के यज्ञोपवीत संस्कार करने के लिए अवसर है । जनेऊ को अंगीकार करने के लिए किस प्रकार पापड़ बेलने पड़े थे यह हमें ज्ञात है । यदि ज्ञात नहीं है तो हममें उसके जानने की उत्कष्ठा होनी चाहिए । इसी प्रकार जनेऊ की सुरक्षा– उसके माध्यम से वैदिक भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए बलिदानिओं की कहानियां इतिहास में भरी पड़ी हैं । कुमारिओं व महिलाओं को यज्ञोपवीत अधिकार पर हुआ विचार मंथन नया नहीं है । इन सब की ओर ध्यान देवें । श्रावणी वाले दिन यज्ञोपवीत पहन कर या बदल कर अपने कर्तव्य की इति श्री कर लेना तो उपहास ही है । जनेऊ तो प्रतीक है हमारे ऊपर पड़े ऋणों का । यदि इन्हें जीवन में उतारने का प्रयास नहीं किया गया तो लकीर के फकीर बनने की बात ही होगी । एक सामान्य शहर में आर्यों के 100 – 125 घर होंगे ऐसी कल्पना हम कर सकते हैं । इन घरों में हम नहीं समझते कि 5–10 दस बालक बालिकाएं न हों जिनके यज्ञोपवीत संस्कार कराने की स्थिति न बनती हो । अब तो सामान्य हिन्दु परिवारों के बालकों के संस्कार कराने की प्रवृति देखने में आ रही है । ऐसे में इस अवसर पर सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत कराने के प्रयास किए जा सकते हैं । इस कार्य के लिए आर्यवीर दल के सदस्यों को भी टटोला जा सकता है । एक और स्त्रोत है वह आर्य शिक्षण संस्थाएं । उन संस्थाओं में या आर्य समाज में उन्हें लाकर संस्कार कराए जाने की सभावनाओं को देखगा होगा ।

पहले तो वेद प्रचार सप्ताह आर्य समाजों में ही मनाया जाता था पर संसाधनों के बढ़ने और मानव शक्ति के उपलब्ध होने के कारण कई आर्य समाजों और प्रतिनिधि सभाओं द्वारा 1–1–माह तक इसका आयोजन किया जा रहा है । इसका ज्वलन्त उदाहरण हमें हमारी पड़ोस की महाराष्ट्र आ.प्र. सभा में देखने में मिलता है । वैसे तो हमारी अपनी सभा के कार्य क्षेत्र में 15–20 उपदेश को एवं प्रचारकों के द्वारा किए गए प्रयास हमारे ध्यान में है । आर्य समाजों के कार्यक्रमों में बालक व बालिकाओं की न केवल उपास्थिति अपितु उनकी रचनात्मक क्रियाशीलता बनाने की आवश्यकता है । यह एक नर्सरी के निर्माण के लिए कदम हो सकता है ।

जबलपुर वालों ने इस पर्व या इसके कालान्तर में वेद मंत्र पाठ अन्तर शालेय प्रतियोगिता प्रारम्भ की हुई है । पहले 3–4 शालाएं भाग लेती थीं पर अब इनकी संख्या में सत्तोषजनक वृद्धि होते–होते 13 तक पहुंच गई है । इस प्रतियोगिता में न केवल विद्यार्थियों को व्यक्मिगत पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं अपितु शालाओं को शील्डें प्रदान की जाती हैं । प्रतिस्पर्धा प्रगति की ओर इशारा करती है । इस उदाहरण को सामने रख कर अन्य आर्य शिक्षण संस्थाएं भी आगे आ सकती हैं । आर्य शिक्षण संस्थाओं में उपलब्ध मानव शक्ति का उपयोग करने के लिए भी यह एक मार्ग हो सकता हैं ।

वेद प्रचार सप्ताह में पारायण यज्ञों का प्रचलन है । यज्ञों वै श्रेष्टतमम् कर्म माना गया है । यह न केवल आर्यों बल्कि अन्य आध्यात्मिक मार्ग के पथिकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है । आवश्यकता है इस प्रकार के आयोजनों को सर्व सुलभ बनाया जाए ।

श्रावणी से अब हम हैदराबाद सत्याग्रह की स्मृति की ओर आते हैं । आर्य समाज कोई पृथक धर्म या सम्प्रदाय न होकर एक आदोलन है । वह न केवल संस्कृति के विचारों का प्रसारण करने वाला है वहीं यह एक जीवित जागृत कार्य कर्त्ताओं का समूह रहा है और अब भी है जो अन्याय व अत्याचारों के लिए अपनी बलि देने वालों का । हैदराबाद के निजाम द्वारा हिन्दुओं के धार्मिक क्रिया कलापों पर कुठाराघात को आर्य समाज कैसे सहन कर सकता था ? अपने प्रिय भाई बहनों के विरूद्ध हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध उसने मोर्चा खोला तथा देश के कोने कोने से जत्थे हैदराबाद पहुंचे । रक्त रंजित रहा है यह आंदोलन पर अन्ततः सत्य की विजय हुई । कहते है कि जो समाज अपने शहीदों को भूल जाता है वह स्वयं भी रसातल को चला जाता है । आइए हम उन शहीदों को जिनने अपने रक्त से इस समाज को जीवित रखा है साथ ही आयोजकों के बुद्धि कौशल, संगठन क्षमता तथा तन मन धन अर्पित करने वालों को भी स्मरण करें जिससे हमें अगले आदोलनों को करने की प्रेरणा मिले । स्मरण है कि अनेक इतिहासकारों का विचार है कि आर्य समाज की लोक प्रियता के कारणों में प्रमुखता उसकी

समाज की तात्कालिक आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता एवं आंदोलनों का आयोजन हैं ।

अब आते हैं योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज के जन्म दिवस की ओर । आज कृष्ण भगवान की जो झांकी संसार की समक्ष है वह एक विचारणीय प्रश्न है । महार्षि ने जिस विलक्षण प्रतिभा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए श्री कृष्णाजी की महिमा को महामण्डित किया था उसको नकारा या भुलाया जा रहा है । देश आतंकवाद, पड़ोसियों की बदनीयति आदि से ग्रसित है । याद आती है तुलसी की चौपाई का 'अंश तुलसी मस्तिष्क तब झुके धनुष बाण होय हाथ' । देश को जहां योग, ज्ञान आदि की आवश्यकता है वहां आज उसकी सर्वोच्च आवश्यकता शौर्य की है । श्री कृष्णजी के शौर्य को समक्ष लाने का कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है । जन्माष्टमी के अवसर पर प्रवचनों, गोष्ठियों के माध्यम है इसे करना होगा । उपरोक्त बातों को स्मरण रखते हुए आर्य समाज के सूत्रधारों को कार्यक्रम बनाना होगा ।

अभी तक हमने 'पर' अर्थात परोपकार या दूसरों के प्रति कर्तव्यों के बारे में चर्चा की । आइए अब 'स्व'–स्वयं पर कुछ चर्चा कर लें । महर्षि ने 'वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना' आर्यों का परम कर्त्तव्य माना है । 'पढ़ाना और सुनाना' के पहले कदम ' पढ़ना और सुनना' की ओर चलें । क्या हम पढ़ व सुन रहे हैं । यह एक अन्तरावलोकन कर देखने की बात है । यदि हम ठीक से पढ़ेगें और सुनेगें तभी हम पढ़ा और सुना सकेगें । आइए इस वेद प्रचार सप्ताह में एक कदम आगे बढ़ें । यदि हम कुछ स्वाध्याय करते हैं तो उसे नियमित करने का प्रयास करें । यदि हम व्यक्तिगत रूप से साधना व योग के पथ पर बढ़ रहे हैं तो अगला कदम जोर से उठाने का प्रयास करें । मानव जीवन का लक्ष है मोक्ष की प्राप्ति । क्या हम मोक्ष पथ के पदगामी बन रहे हैं यह विचार इस अवसर पर करने की आवश्यकता है । इसके लिए हमें प्रकाश वेदों, गीता आदि से ही प्राप्त हो सकेगा । पर यह ध्यान रखें कि आनन्द के पथ पर, योग के पथ पर, मोक्ष के पथ पर ले जाने के लिए बहुत ही दुकानें खुली हैं । उनके आडम्बरों से अपने आप को बचाएं ।

आइए इस वेद प्रचार सप्ताह पर जहां हम हैं उससे एक सीढ़ी उपर चढ़ने का संकल्प लें एवं तदानुसार कार्य करें । इसी में पर्व के मनाने की सार्थकता होगी ।

जयसिंह गायकवाड़

.....***.....

सम्पादकीय टिप्पणियां

हमने जनवरी से इस पत्रिका को पुनः प्रकाशन प्रारभ किया है । अभी तक यह श्वेत श्याम ही छपता रहा है । आर्य समाजों तथा पाठकों का सहयोग मिलता रहा है । हर्ष का समाचार है कि यह अंक आपके हाथों में रंगीन रूप में आ रहा है । सभा पदाधिकारियों में रंगीन छापने की स्वीकृति दी है । वे धन्यवाद के पात्र हैं ।

.....***.....

अवसर का लाभ उठाते हुए कहना चाहेगें कि इस पत्रिका का मुद्रण श्री रवीन्द्र आर्य जबलपुर न लाभ न हानि को ध्यान में रख कर रहे हैं । श्री रवीन्द्र आर्य, आर्य परिवार से आते हैं । सक्रिय योगदान मौन रख करते हैं । वस्तुतः रंगीन छापने की प्रेरणा उन्ही की ओर से आई है । वे धन्यवाद के पात्र हैं ।

.....***.....

हमारी अपेक्षा है कि इसमें अपनी सभा की गतिविधियों की जानकारी अधिक से अधिक देते रहें । अतः आर्य समाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के सूत्रधारों से निवेदन है कि वे अपनी संस्थाओं के क्रियाकलापों की जानकारी शीघ्र ही भिजवाएं जिससे उसकी सूचनाएं जल्दी प्रकाशित की जा सकें । यह जानकारी सभा कार्यालय भिजवाई जा सकती है । तात्कालिक जानकारी मेरे निवास के पते (जो पृष्ठ 3 पर छापा गया है) पर भी भिजवा सकते हैं ।

.....***.....

धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं श्रीमती शान्ता गायकवाड़, विद्यालंकार एम.ए. संस्कृत, बी.एड. के प्रति जो 'आर्य सेवक' के कार्यों–प्रूफ संशोधन, लेखचयन सुझाव आदि के द्वारा सहयोग करती रहती हैं । जून के अंक के लिए सम्पादकीय तो मैं हाथ में प्लास्टर बन्धे रहने के कारण लिख नहीं सकता था तो उन्होंने मेरे बोलने पर उसे लेखबद्ध कर सहयोग दिया ।

.....***.....

जयसिंह गायकवाड़

मैं मुक्ति का पथिक बनूँ

आचार्य बलदेव

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्त्रव ।। (ऋ.9.113.11)

अर्थ – (यत्र) जहाँ (आनन्दाश्च मोदाश्च) आनन्द और हर्ष देने वाली सिद्धियाँ हैं (मुदः प्रमुद आसते) आनन्दित और हर्षित मुक्त पुरूष विराजमान हैं (कामस्य यत्र आप्ताः कामाः) जहाँ जिस वस्तु की कामना की जाती है वह संकल्प मात्र से ही प्राप्त हो जाती है । (तत्र माममृतं कृधि) उस लोक में मुझे मुक्ति का पथिक बनाइए । (इन्द्राय इन्दो परिस्त्रव) हे दयालु परमेश्वर ! इस (इन्द्राय) जीव पर (परिस्त्रव) दया, कृपा कीजिये ।

सुख की इच्छा सभी करते हैं । दुःखी कोई रहना नहीं चाहता । जो इन्द्रियों के प्रतिकूल हो उसे दुःख कहते हैं । **तृष्णार्ति प्रभवं दुःखम्** (महा.शा.25.22) तृष्णा अर्थात् इच्छाओं की पूर्ति न होने से जो पीड़ा होती है वही दुःखों का कारण है । **नास्ति राग समं दुःखम्** (महा.शा. 175.35) किसी विषय में आसक्ति या राग दुःखों का प्रधान कारण होता है । **प्रसृतैरिन्द्रियैर्दुःखी** (महा.शा. 204.9) इन्द्रियों के विषयों में फँसा हुआ मनुष्य दुःखी रहता है । **सर्वं परवशं दुःखम् (मनु.)** पराधीन सपनेहु सुख नाहीं । दुःख के ये लक्षण सामान्य जनों के लिए बतलाये हैं । योगदर्शन में कहा है – **परिणाम ताप संस्कार – दुःखैर्गुणवृत्ति विरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः** (योग. 2.15) परिणाम, ताप, संस्कार दुःख और सत्त्व, रज, तम गुणों के स्वभावों में परस्पर विरोध होने से विवेकी जन के लिये सब लौकिक सुख भी दुःख के समान ही हैं । भोगों को भोगने से इन्द्रियाँ और अधिक चपल हो जाती हैं और वे उससे भी अच्छे पदार्थ की इच्छा करती हैं । इसे परिणाम दुःख कहते हैं । व्यक्ति लौकिक सुखों की प्राप्ति के लिये जो उसके अनुकूल हैं, उन पर अनुग्रह और बाधक तत्त्वों को हटाने के लिये हिंसादि भी करता है । इसके अतिरिक्त व्यक्ति यह भी चाहता है कि आज जो उसके पास सुख के साधन हैं वे कभी समाप्त न हो जायें ।यह चिन्ता उसे सदैव संतृप्त करती रहती है । यह ताप दुःख है । जो भोगे जा रहे हैं उनका संस्कार चित्तभूमि पर पड़ता रहता है । इन्हीं संस्कारों से अगला जन्म मिलता है और व्यक्ति के जैसे संस्कार हैं, वैसे ही कर्म करता है । इस प्रकार वृत्ति, कर्म, संस्कार का यह चक्र चलता ही रहता है । इसे संस्कार दुःख कहते हैं । चित्त में सत्त्व, रज, तम तीनों गुण गौण–प्रधान भाव से बने रहते हैं । जब सत्त्व गुण प्रधान होता है तो रज, तम भी कुछ मात्रा में वहां होते ही हैं जिसके कारण सुख की स्थिति में भी कुछ मात्रा में दुःख भी उसमें मिश्रित रहता है । इसका नाम गुण वृत्ति विरोध दुःख है । जैसे मकड़ी का जाला आँख में पड़ जाये तो पीड़ा का कारण बनता है, अन्यत्र नहीं ऐसे ही सुकोमल चित्त वाले विवेकी जन को ही ये सांसारिक सुख पीड़ित करते हैं, सामान्य लोगों को नहीं ।

इन सभी वेदनाओं और दुःखों की निवृत्ति योगाभ्यास से होगी जैसा कि चरक संहिता में कहा है –

योगे मोक्षे च सर्वासां वेदनानामवर्तनम् ।
मोक्षे निवृत्तिर्निश्शेषा योगो मोक्ष प्रवर्तकः ।।
(चरक.शा. 1.22)

योग और मोक्ष ही सर्वविध दुःखों को दूर करने के उपाय हैं । इनकी सम्पूर्ण निवृत्ति मोक्ष प्राप्त कर लेने पर ही होती है । योग मोक्ष का प्रवर्तक अर्थात् प्राप्त कराने वाला है । परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित न्याय–धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने–पढ़ाने और धर्म से पुरूषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपात रहित, न्याय–धर्मानुसार ही करे, इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से बन्ध होता है (सत्यार्थ. नवम. समु.) ।

मुक्ति में भौतिक शरीर या इन्द्रियों के गोलक जीव के साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण रहते हैं जिनके द्वारा वह मुक्ति के आनन्द को भोगता है । मन्त्र कहता है –

शारीरिक भाषा की महानता

पं. सत्यवीर शास्त्री

मनुष्य उत्पत्ति के पश्चात् मानव मानव से अशाब्दिक वार्तालाय करता था । मन में उत्पन्न होने वाले भावों को प्रगट करने का साधन पूर्ण विकसित भाषा है । जब भाषा विकसित नहीं हुई थी, तब व्यक्ति के चेहरे से, उसके, बैठने, उठने, चलने, बोलने के ढँग से हाथ-पैरों के इशारों से उसकी भावनाओं को समझा जाता था । इसे शारीरिक भाषा कहते हैं ।

वर्तमान में शारीरिक भाषा की ओर नवयुवक - नवयुवतियाँ आकर्षित हो रही हैं । क्योंकि मुलाकात, सामुहिक-बहस, स्पर्धा, वाद-विवाद, भाषण तथा नृत्य की परीक्षाओं में शारीरिक भाषा को प्राधान्य दिया जा रहा है । समयानुसार शारीरिक भाषा का प्रदर्शन करने वाले भाषा विदों से भी अधिक वक्तव्य अपने कार्य में सफल होते हैं । आज के वैज्ञानिक युग में भी शारीरिक भाषा अपना विशिष्ट प्रभाव रखती है । मनुष्य का चेहरा, आँखें, भाषण-शैली, चाल-चलन ये शारीरिक भाषा के प्रमुख साधन है ।

चेहरा :- चेहरा मनुष्य का दर्पण है । व्यक्तित्व की पहचान चेहरे से होती है । उत्साह, निरूत्साह, राग-द्वेष, काम, क्रोध, चिन्ता, आनन्द की जानकारी चेहरे से होती है । चेहरे पर स्वाभाविक हँसी हो तो, मनुष्य आनंदी । निराशा या उदासी हो तो दुःखी । आँखे लाल, चेहरा तमतमाया हो तो क्रोधी समझा जाता है । दांतो से नाखून काँटने वाला, बैठे-बैठे-पैर हिलाने वाला- निराशा में लिप्त समझना चाहिए । शिर के बाल बार-बार खींचने वाला आपत्ति में फंसा हुआ होता है । बार बार गला साफ करने वाला अधिकार जमाना चाहता हैं । हाथ बाँधकर बैठने वाला,

शेष भाग अगले पृष्ठ पर ....

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते जहाँ आनन्द और आनन्द देने वाले पदार्थ हैं, जहाँ मुक्ति के आनन्द को प्राप्त मुक्तात्मा पुरूष विराजमान हैं । **कामस्य यत्राप्ताः कामा तत्र माममृतं कृधि** जहाँ संकल्प मात्र से ही सब कामनाओं की तृप्ति हो जाती है, उस लोक का मुझे पथिक बनाइये ।

जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से जीव भोगता है वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनन्द को जीवात्मा भोगता है । वह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टि विद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोक-लोकान्तरों में अर्थात् जितने ये लोक दीखते हैं और नहीं दीखते, उन सब में घूमता है । सब पदार्थों को जो कि, उसके ज्ञान के सामने हैं, सबको देखता है । जितना ज्ञान अधिक होता है, उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है । मुक्ति का समय छत्तीस सहस्त्र बार सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय का जितना समय होता है, उतने समय पर्यन्त आत्मा मुक्ति का आनन्द भोगता है (स.प्र. नव.समु.)

पवित्रता

जितना-जितना मनुष्य पवित्रता को धारण करता है उतना - उतना ही आनन्द अधिक प्राप्त करता हुआ मुक्ति के समीप जाता है । पवित्रता करने हेतु देने का स्वभाव बनाना चाहिये । किसी से प्राप्ति की इच्छा न करे । चोरी करने व दूसरे की सम्पत्ति को लूटने का यत्न न करें । दो सगे भाई प्रेम से रहते थे । घर में कलह न हो इसलिये पृथक-पृथक हो गये । एक दिन दोनों के गेहूँ के ढेर बाहिर खेत में पड़े थे । छोटे भाई की पर्याय गेहूँ की रक्षा की आ गई । उसने विचार किया कि बड़ा भाई अधिकांश बाहिर रहता है । उसका परोपकार करने में अधिक समय व्यतीत होता है । उसने 5 मन अपने गेहूँ बड़े भ्राता के गेहूँ में मिला दिये । दूसरी बार बड़े भाई की पर्याय आई । उसने विचार किया कि छोटा भाई छोटा होने के कारण सहायता के योग्य है । उसी प्रकार बड़े भाई ने छोटे भाई के गेहूँ में 5 मन अपने गेहूँ मिला दिये । इस प्रकार देने की प्रवृत्ति से दोनों में प्रेम का आनन्द बढ़ा । उपासक व दानी बनना ही मनुष्य के लिये मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है ।

-प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

पैर पर पैर रखने वाला, अपने विचारों को गोपनीय रखकर दूसरों का निरीक्षण करने वाला होता है । यह भी सच है दिल के भाव बता देता है, असली-नकली चेहरा स्वामी दयानन्द सरस्वती भक्तों से घिरे हुए उच्चासन पर विराजमान थे । एक ब्राह्मण बहुत-बड़ा मिठाई का पेकेट लेकर स्वामी जी के पास आकर बोला "महाराज! थोड़ी सी मिठाई स्वीकार कीजिए" । चरण वंदन कर स्वामी जी के सामने मिठाई रख दी । स्वामीजी ने जैसे ही उसके चेहरे पर दृष्टि डाली वैसे ही वह घबराया, और उसका चेहरा उदास हो गया, नीचे जमीन की ओर देखने लगा । स्वामीजी ने एक पेड़ा उठाया, और कहा ''लो प्रसाद खाओ'' ब्राह्मण बहुत डर गया, हाथ जोड़कर बोला, महाराज मिठाई केवल आपके लिए ही है ऐसा कहकर वह लौट गया ।

स्वामीजी ने भक्तों से कहा, इसके चेहरे से ऐसा अनुमान है कि यह कोई दुःसाहस करने का प्रयास कर रहा है । इसने मिठाई में कोई जहरीली चीज मिलाई है । एक भक्त ने कहा, महाराज यह सत्य कैसे जाने? स्वामीजी ने कहा आप लोगों को अभी दिखलाते हैं । ऐसा कहने पर उन्होंने वहीं पेड़ा कुत्ते को डाला । कुत्ते ने खा लिया । पाँच मिनट के बाद, कुत्ता-रोने-चिल्लाने लगा-उठ खड़ा होता फिर गिर पड़ता चारों ओर चक्कर काटता । इस दृश्य को देखकर भक्त बड़े अचरज में पड़े । स्वामीजी ने कुत्ते को फिर कोई औषाधि खिलाई जिससे कुत्ता आंधे घंटे के बाद स्वस्थ हो गया । स्वामीजी ने चेहरे से जो अनुमान लगाया था, वह सच था ।

भाषण-शैली :- भाषण देते समय, खड़े रहने, बैठने, आगे-पीछे होने के तरीकों को भी शारीरिक भाषा कहते हैं । वक्ता सीधा खड़ा रहकर भाषण देता है तो, वह सतर्कता से बोलने वाला विद्वान होता है । बोलने वाला विषयानुरूप संपूर्ण सभा को अपनी ओर हाव-भावों से आकर्षित कर लेता है तो समझना चाहिए कि वह अपने विषय में निष्णात है ।

मनुष्य की शारीरिक गति-विधियाँ भी उसकी आंतरिक दशा का दिक्दर्शन कराती है । जैसे धीरे-धीरे चलने वाला आरामदायी होता है । हाथ-आगे-पीछे हिलाते हुए चलने वाला ध्येयवादी । जेब में हाथ डालकर चलने वाला समीक्षक । हाथ पीठ के पीछे बाँधकर चलने वाला स्वयं के लिए ही सोचने वाला और जमीन की ओर देखकर चलने वाला समस्या ग्रस्त होता है ।

हाथ :- हाथों की अँगुलियाँ, कंधा, आँखों की हलचल भी शारीरिक भाषा है । इन्हीं अंगों की विशिष्ट हलचल से व्यक्ति अपने विचारों से श्रोताओं को अवगत कराता है । हलचल न करने वाले व्यक्ति को समझना कठिन है । विषयों के अनुसार अंग-प्रदर्शन करने वाला व्यक्ति सफल होता है । नृत्य में जनता समरस इसलिए होती है कि नर्तक, प्रसंगानुरूप अंग-प्रदर्शन कर शारीरिक भाषा से जनता को प्रभावित कर लेता है । शारीरिक भाषा का सर्वोत्तम उदाहरण ''लोकनाट्य'' या ''तमाशा'' है ।

आँखो का प्रदर्शन :- देहभाषा का ज्ञान नहीं । कोई जान-पहचान नही । पहले कभी एक-दूसरे को स्वप्न में भी देखा नहीं । फिर भी जब नजरों से नजर मिल जाती है तो, तोबा मच जाता है । यह शारीरिक भाषा का जबरदस्त प्रभाव है । मनुष्य की आँखे विविध भावनाएँ प्रगट करती हैं । आनंद, उत्साह, निराशा, क्रोध आदि भाव, आँखों से पहचाने जाते हैं । सीधी आँखें, खुले ओंठ प्रसन्नता के सूचक हैं । लाल आँखे तनी भौंएं क्रोध का दिग्दर्शन कराती हैं । नीची आँखे, उदास चेहरा कमजोरी दर्शाती हैं ।

भारतवर्ष में शासन मान्य भाषाएँ एवं शतशः बोलियाँ बोली जाती हैं । यह असंभव है कि एक व्यक्ति इतनी सारी भाषाओं बोलिओं को अवगत कर सकें । यदि हम शारीरिक भाषा को अवगत कर लेते हैं तो, हर भारतीय भाई-बहन के भावों-विचारों को समझ कर सामजंस्य बनाकर जीवन सुखी बना सकते हैं ।

प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. विदर्भ

.....***.....

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ

दयानन्द भवन, महर्षि दयानन्द मार्ग, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर-४४० ००१ (महाराष्ट्र)

पंजीयन क्रमांक : एफ १०१ (एन) पोष्ट बॉक्स नं. ७६ जी.पी.ओ. नागपुर दूरभाष : (०७१२) २५९५५५३

ज्ञापन

रामपाल दास के अनैतिक कृत्यों, धर्मविरोधी कार्यों, आपराधिक मामलों, अश्लील सामग्रियों व असामाजिक गतिविधियों के विरोध में उपायुक्त महोदय (रोहतक) के माध्यम से मुख्यमन्त्री हरियाणा सरकार, गृहमंत्री हरियाणा सरकार, उपायुक्त रोहतक, एस.पी. रोहतक, एस.डी.एम. रोहतक को पत्र के माध्यम से हरियाणा सरकार को धारा-145 के आधार पर इस असत्लोक आश्रम को अपने अधीन लेने हेतु अपील -

1. प्रशासन पर यह आक्षेप है कि वह एकपक्षीय होकर भू-स्वामियों के विरूद्ध तथा हत्यारोपी रामपाल दास के समर्थन में कार्य कर रही है। जब 17.4.2013 को न्यायालय ने 24.4.2013 तक स्टेटस्को (यथास्थिति) का निर्णय ले लिया तो इससे पूर्व ही लगी हुई आश्रम में धारा-144 के आदेश का पालन न करते हुए प्रशासन इस जगह पर रामपाल दास के हजारों आपराधिक अनुयायियों को इकट्ठा करके न्यायालय के इस निर्णय की अवमानना क्यों कर रहा है अथवा अवमानना क्यों की ?
2. 24.4.2013 तक स्टेटस्को यथास्थिति का निर्णय न्यायालय के करने के उपरान्त भी प्रशासन आज भी इस असत्लोक आश्रम में मोर्चाबन्दी तथा निर्माण कार्य अपनी (पुलिस) की उपस्थिति में करवाकर न्यायालय के आदेश का उल्लंघन करके उसके आदेश की अवमानना किस आधार पर कर रहा है ? अथवा कोर्ट के आदेश की अवमानना किस आधार पर की ?
3. रामपाल दास तथा इसके अपराधी अनुयायियों का यह इतिहास रहा है कि पहले अपने विचारधाराओं को न मानने वाले व्यक्तियों पर स्वयं हमला करता व करवाता रहा है तथा अपने से भिन्न विचारधाराओं वाले व्यक्तियों पर झूठे आरोप व मुकदमे करता रहा है। उदाहरण प्रस्तुत है - 2006 में सैकड़ों व्यक्तियों को गोलियों से घायल किया तथा एक युवक की हत्या की। इससे पूर्व ग्राम छुड़ानी (झज्जर) के महन्त बह्मस्वरूप तथा उसके सेवकों को लोहे की राडों से पीटकर अधमरा किया। 2006 में ही अपने आपराधिक अनुयायियों के सिख भाइयों के साथ झगड़ा किया, जिसके कारण उन्होंने रोड जाम करके इसके 15 (पन्द्रह) अनुयायियों पर कोर्ट में केस दर्ज करवाया। अभी इसने 9.4.2013 को चारों तरफ के ग्रामों से इकट्ठे हुए लोगों के उपरान्त, डी.सी., एस.डी.एम., एस.पी. तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के 82 वर्षीय वृद्ध साधु आचार्य बलदेव के ऊपर पत्थरबाजी करने के झूठे आरोप लगाकर रोहतक कोर्ट में झूठा केस दर्ज करवाया है। हरियाणा के जिला जीन्द के कन्डेला ग्राम में एक सनातनी साधु बाबा पर कई बार कातिलाना हमला करवा चुका है तथा बार-बार उसकी हत्या करने की धमकी दे चुका है। उस इलाके की जनता उस साधु बाबा की रक्षा के लिये कई बार इकट्ठी हो चुकी है। हम हरियाणा सरकार से अपील करते हैं कि इसके ऊपर धारा-307, 302, 120, 140, 420 आदि अनेक आपराधिक केस दर्ज हैं। यह दो वर्ष तक जेल में रहकर जमानत पर छूटा हुआ है। इसके उपरोक्त अपराधों को देखते हुये इसकी जमानत तुरन्त रद्द होनी चाहिये, जिसके कारण जनता इसके पापों से छुटकारा पा सके तथा इसके दोनों बरवाला (हिसार) और करौंथा (रोहतक) के असत्लोक आश्रमों को सरकार इसके लड़ाई-झगड़े के कारण जनता की शान्ति के लिए धारा-145 के अधीन अपने हाथ ले लेवे जिसके कारण इसके पापों की निवृत्ति के उपरान्त समाज सुख-शान्ति से जीवित रह सके।
4. इस धर्मनिरपेक्ष देश में यह व्यक्ति भारत के प्रत्येक धर्म के व्यक्तियों के महापुरूषों पर आक्षेप करता रहा है। जैसे सनातन धर्म के पुरूषोत्तम श्रीराम, योगिराज श्रीकृष्ण पर, वैदिक धर्म के मानने वाले आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द पर, सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरू नानक तथा स्वंय को कबीरपंथी कहने वाला यह व्यक्ति कबीर के मन्तव्यों के विरूद्ध असम्भव, अप्राकृतिक, अनर्गल बातों से सभी धर्मों का अपमान करता है। जिन वेदमन्त्रों का उच्चारण यह स्वयं भी नहीं कर सकता उस विषय में कहता है कि कबीर ने भैंसे के मुख से वेदमन्त्रों का उच्चारण करवाया। अतः इस धर्मनिरपेक्ष देश में सभी धर्मों के सम्मान के लिए इस व्यक्ति का पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो

तथा दूरदर्शन पर तुरन्त प्रसारण बन्द करवाया जाये ।

5. Scheduled Road Act व Schedule Road Rules के अनुसार भारत में किसी भी राष्ट्रीय राजमार्ग के 30 मीटर की दूरी तक कोई निर्माण कार्य नहीं किया जा सकता है और माननीय उच्च न्यायालय पंजाब व हरयाणा ने भी हरयाणा सरकार को समय-समय पर ऐसे निर्माणों को गिराने के आदेश दिए हैं । तथा कथित रामपाल दास ने राष्ट्रीय राजमार्ग रोहतक-झज्जर पर राष्ट्रीय राजमार्ग के 30 मीटर के अन्दर तथाकथित सतलोक आश्रम बनाया हुआ है और वर्तमान में भी पुलिस अपनी सुरक्षा के अन्दर निर्माण कार्य करवाती हुई 'बाड़ खेत ने खाने' वाली कहावत को चरितार्थ कर रही है । यह जिला पुलिस प्रशासन तथा जिला प्रशासन द्वारा खुल्लमखुल्ला हाईकोर्ट के आदेश का उल्लंघन है ।

6. रामपाल दास ने ग्राम करौंथा व डीघल के बीच खेत की जमीन पर जो निर्माण कार्य किया अवैध है, क्योंकि 'चेंज ऑफ लैण्ड यूज' की इजाजत सरकार से लिये बिना तथा विकास के लिये दी जाने वाली फीस दिए बिना निर्माण कार्य अवैध है और सरकार ऐसे निर्माण कार्य को आये दिन गिरा भी देती है, परन्तु रामपाल दास द्वारा किये गये अवैध निर्माण को गिराने की बात तो दूर की रही, अपितु स्वयं पुलिस प्रशासन, सरकार व जिला प्रशासन की जानकारी के उपरान्त स्वयं उपस्थित होकर निर्माण कार्य करवा रही है । यह एक समझ से बाहर की बात है कि सरकार स्वयं गैर-कानूनी कार्यों में क्यों संलिप्त है ?

7. इस व्यक्ति ने गाँव करौंथा की एक बहन कमला के स्थान पर किसी दूसरे व्यक्ति को खड़ा कर, दूसरे व्यक्ति के फोटो व हस्ताक्षरों व धोखाधड़ी करके फर्जी रजिस्ट्री करवाई है । अतः यह व्यक्ति उस बहन अथवा उसके परिवार के साथ कोई भी दुर्घटना करवा सकता है । अतः यहाँ पर उसको कब्जा देना उचित नहीं है ।

8. जिस भूमि पर यह कब्जा करने का प्रयास कर रहा है उस खेवट के अनेक हिस्सेदार हैं । यह रोड की भूमि अत्यधिक मूल्यवान होने के कारण कभी भी कोई भी अनहोनी घटना यहाँ घट सकती है । अतः यह भूमि इसको न दी जाये और इसको धारा-145 के तहत प्रशासन अपने कब्जे में ले लेवे ।

9. इस व्यक्ति ने अपने आश्रम का नाम बन्दी छोड़ भक्ति मुक्ति सतलोक आश्रम रखा हुआ है । जबकि यह पहले भी डीघल गाँव के 15-20 युवकों पर झूठे मुकदमे बनाकर बन्दी बनाने का प्रयास करता रहा है । आज भी इसने जिन व्यक्तियों को हमने कभी देखा ही नहीं, उनके द्वारा आचार्य बलदेव, सत्यवीर शास्त्री, आचार्य विजयपाल, चौ. मांगेराम आदि पर अनेक अनहोने झूठे मुकदमे 302 से बचने के लिये लगवाये हुए हैं, जिसे हरियाणा सरकार ने तुरन्त प्रभाव से समाप्त करवा देने चाहिये ।

10. इस जगह पर इसका किसी भी प्रकार से न्यायसंगत अधिकार नहीं बनता । अतः शीघ्र ही इसको तथा इसके अनुयायियों को बाहर निकालकर दूर स्थान पर भेज देना चाहिए तथा इस असत्लोक आश्रम को धारा-145 के तहत प्रशासन को अपने अधीन कर लेना चाहिये ।

मंत्री कोषाध्यक्ष प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ

.....***.....

आर्य समाज मंदिर में विवाह संस्कार कराने हेतु नियम

(सार्वदेशिक सभा के दिशा निर्देश व आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ की अंतरंग सभा में चर्चा पर)

आर्य समाज 16 संस्कारों के माध्यम से "मनुर्भव जनया दैव्यं जनम" अर्थात स्वयं इन्सान बन, दूसरों को भी मानवता के रास्ते पर चलना सिखा, को सार्थक करने की योजना व अच्छे समाज के निर्माण को पनपने का अवसर प्रदान करने हेतु एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है जिससे हम महर्षि के 10 नियमों को साकार कर सकें किन्तु यह पाया गया है कि हम 15 संस्कार तो भूल गये सिर्फ 13 वॉ संस्कार विवाह संस्कार हमे याद रहा और यह संस्कार हर आर्य समाज में अधिकता से हो रहे हैं, कारण आप बखूबी समझते हैं, और कानूनी प्रक्रिया को बिना समझे हम उस दिशा में दौड़ पड़े जिसका परिणाम यह हुआ कि "राजस्थान कोर्ट" "केरल हाईकोर्ट" "जबलपुर सिव्हिल कोर्ट" के निर्णयों से जहाँ आर्य समाज की बदनामी हुई वहीं कुछ पदाधिकारियों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा । इस विषय पर आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की अंतरंग सभा में काफी चर्चा हुई व उसी के तहत आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार नियम बनाये जाना प्रस्तावित है :

-: नियम :-

1. वर कन्या के पृथक पृथक प्रार्थना पत्र, अपना पूरा विवरण सहित, जिन पर एक दूसरे के स्वीकृति के हस्ताक्षर हों,

आर्यसमाज के पुरोहित को देवें । पुरोहित जी अवलोकन के पश्चात् आवेदन पत्र में आपत्ति अनापत्ति दर्शाते हुए, विवाह संस्कार समिति के सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करें ।

2. संस्कार समिति के सदस्य, सुविधानुसार दोनों पक्षों को बुलवाकर पूछताछ करें । संतुष्ट होने के बाद कम से कम दो सदस्यों के हस्ताक्षर आवेदन पत्र में हों ।
3. आयु प्रमाण पत्र (हाई स्कूल की सनद्) न्यूनतम आयु कन्या 18 वर्ष, वर 21 वर्ष, वर की उम्र कन्या से अधिक होने पर यह अंतर अधिकतम 10 वर्ष तक मान्य रहे । कन्या की उम्र वर से अधिक होने पर यह अन्तर अधिकतम 2 वर्ष तक मान्य रहेगा ।
4. शपथ-पत्र (बयान-ए-हल्फी) जिसमें नाम, माता-पिता का नाम, पता, आयु, शिक्षा, वर्तमान आवासीय विवरण, विवाहित, अविवाहित, विधुर, विधवा, तलाकशुदा आदि मानसिक स्थिति स्वस्थ, परस्पर रिश्ता (यदि कोई) निषिद्ध नातेदारी, सगोत्र न होने की आख्या, शपथकर्त्ता/ कर्त्ती के विरूद्ध कोई पुलिस रिपोर्ट या कोर्ट केस न होने या अपराधी न होने की आत्म स्वीकृति, लालच, दबाव, धमकी आदि न होकर स्वेच्छा से विवाह की स्वीकारी तथा बेमेल विवाह न होने का प्रमाण हो । शपथ पत्र हेतु नोटरी का एक पेनल, आर्यसमाज द्वारा निर्धारित किया जाए ।
5. विधर्मी की स्थिति में शुद्धि प्रमाण पत्र तथा नये नामों की घोषणा ।
6. वर एवं कन्या के पासपोर्ट साईज की नवीनतम् चार-चार फोटो, शपथ पत्र के साथ प्रस्तुत किये जाएं । एक- एक फोटो शपथ पत्र पर, एक-एक फोटो विवाह रजिस्टर एवं दो-दो फोटो सर्टिफिकेट के लिए ।
7. विवाह संस्कार के समय, संस्कार समिति के कम से कम एक सदस्य उपस्थित रहे । 4 गवाहों के हस्ताक्षर (विवाह के साक्षी के रूप में संबंधी या मित्र) होना आवश्यक है ।
8. नोटिस बोर्ड पर सूचना 7 दिन पहले लगाना आवश्यक है ।
9. माता-पिता को 6 दिनों का समय देकर सूचना तथा सहमति के लिए पत्र, आर्यसमाज द्वारा लिखा जाए ।
10. विवाह संस्कार के समय वर-वधू के परिधान, भारतीय वेशभूषा के अनुरूप होना चाहिए । विवाह के पूर्व दोनों पक्षों से एक-एक शपथ पत्र भरवाया जाए, जिसमें आर्यसमाज मंदिर परिसर में धूम्रपान, शराब आदि नशापान, गुटका खाना आदि अशिष्ट कार्यों पर प्रतिबंध हो तथा नियमों के उल्लंघन होने पर विवाह रोककर कानूनी कार्यवाही करने की चेतावनी हो ।
11. नियम व शर्तों के पूर्ण होने पर एक सप्ताह के भीतर विवाह संस्कार सम्पन्न करा दिया जावे । विवाह संस्कार की अंतिम स्वीकृति, प्रधान या मंत्री द्वारा दी जाए । दोनों परिवारों की सहमति की स्थिति में नियमों को आवश्यकतानुसार शिथिल किया जा सकता है ।
12. विवाह संस्कार के बाद वर-वधू को अलग-अलग विवाह प्रमाण पत्र दिया जाए ।
13. समाज के पत्राचार - एजेण्डा, कार्यवाही पंजिका तथा प्रमाण पत्र जिस पर प्रधान, मंत्री तथा पुरोहित के हस्ताक्षर तथा वर- कन्या के हस्ताक्षर दिये, गये दान की पावती विधिवत रजिस्टर के रूप में सुरक्षित रखा जाए ।
14. विवाहेच्छु को गृहस्थ चलाने में समर्थ होना चाहिए । एतवर्ष अपनी आजीविका प्रमाणित करें ।
15. विवाह वेदी में बृहद होम (यज्ञ), पाणिग्रहण पूर्वक लाजाहोम व परिक्रमा (फेरे) सप्तपदी पूर्वक एवं महर्षि दयानन्द विरचित "संस्कार विधि" में वर्णित विवाह संस्कार ही, संविधान की दृष्टि में वर्णित वैदिक (आर्य) पूर्ण तथा वैध हो सकेंगे ।
16. आर्य समाज में विवाह आयोजित करते समय इन नियमों का पालन करना आत्यंत आवश्यक है, अन्यथा करवाए गए विवाह को अवैध और गैरकानूनी घोषित किया जा सकता है । ऐसी परिस्थितियों में आर्यसमाज से संबंधित पदाधिकारी कानूनी कार्यवाही के लिए भी उत्तरदायी होंगे ।
17. आर्यसमाज, जो विवाह संस्कार सम्पन्न करा रही हो, उसे प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, से संबद्ध होना चाहिए । तद् विषयक आख्या का उल्लेख प्रमाण पत्र में होना चाहिए । तभी विवाह प्रमाण पत्र वैध माना जाएगा ।
18. आर्य समाज जो विवाह संपन्न करा रही है उसे प्रान्तीय सभा (आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ सदर नागपुर) से सम्बद्ध होना चाहिए तथा वैध सम्बद्ध प्रमाण पत्र का क्रमांक विवाह प्रमाण पत्र पर अंकित होना चाहिए । साथ ही राज्य शासन द्वारा बनाये गये नियमों का भी कड़ाई से पालन किया जाना चाहिये ।

कृपया आपके सुझाव शीघ्र ही भिजवाएँ जिससे नियमों को अंतिम रूप दिया जा सके ।

अशोक यादव - कार्यालय मंत्री

कहो वेद 'हाँ' या सहो वेदना

देवनारायण भारद्वाज

हाँ या ना, इन दो नन्हें शब्दों का संसार में बड़ा बोल बाला है । ये जिसके साथ जुड़ जाते हैं, वह या तो सक्रिय हो जाता है या निष्क्रिय,जीवन्त हो जाता है या मृतवन्त । इसलिये इन शब्दों का विवेक पूर्वक प्रयोग वांछित है, अन्यथा घर-समाज में प्रायः हास्यास्पद ही नहीं, त्रासद स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।

वेद के साथ जोड़िए-हाँ, तो मिलेगा वेदोपदेश, फिर हमारे जीवन का कल्याण ही कल्याण है । वेद कह उठेगा - उद्यानं ते पुरूष नावयानम् (अथर्ववेद 8.16) हे पुरूष ! तुम्हारी उन्नति हो - अवनति कदापि नहीं । जाने अनजाने कैसे भी वेद के साथ जुड़ गया ना - तो बन गया शब्द 'वेदना' अर्थात व्यथा, पीड़ा, सन्तापकारी अकल्याण । इसलिये हमें हर क्षण सतर्क रहना होगा कि हमारे जीवन में वेद ही वेद रहे, छिटककर इसके साथ 'ना' न लग जाये, जिससे हम वेदना के भँवर जाल में फँसे रह जायें । नीचे की दिशा-बसुन्धरा पंर रहते हुए यदि हम वेद से जुड़ेगे, जो शेष पाँचों दिशायें हमारे लिए 'विद ज्ञाने, विद सत्तायाम्, विद विचारणे, विद-चेतनाख्यान निवासेषु, विद लृ लाभे की वर्षा करने लगेंगी । हम जानने-समझने लगेंगे, हम अच्छी प्रकार रहने-जीने लगेगें, हम चिन्तन-मनन करने वाले बनेंगे, स्वशरीर व संसार का सूझ-बूझ के साथ समन्वय करने वाले बनेंगे, और लोक-परलोक की उपलब्धि एवं सम्पादन में समर्थ होंगे । आपने देखा,वेद की हां में हां मिलाने से हमें मिलता है प्रेय-श्रेयदायी उपरोक्त पञ्चामृत जिसमें ज्ञान, अस्मिता, विचारणा, चेतना एवं शुभ लाभ का मधुर मिश्रण, हरपल हमें वेदना से बचाता है । वेद के साथ हामी भरने का चमत्कारी लाभ मानव को कैसे मिलता है ? वेद से ही पूछते हैं ।

ऋचंवाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये । वागोजः सहौजो सयि प्राणापानौ ।। यजुर्वेद 36.1 ।।

वाणी का आश्रय लेकर मैं ऋग्वेद की ऋचाओं की शरण में जाता हूँ । मेरी वाणी ज्ञान व सत्य का वाचन करने लगती है । मन का आश्रय लेकर मैं यजुर्वेद के अध्यायों की शरण में जाता हूँ । इसके स्वाध्याय से मेरा मन यज्ञीय कर्मों में लग जाता है । मैं अपने प्राण व जीवनी शक्ति का आश्रय लेकर सामवेद के साम मन्त्रों की शरण में जाता हूँ । मैं बोलने में, लोग सुनने में आनन्दित होते हैं । मैं अपने श्रोत्रों का आश्रय लेकर चक्षु, ब्रह्मवेद-अथर्ववेद के विज्ञान की शरण में जाता हूँ मेरा दृष्टिकोण वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण, ज्योतिर्मय बन जाता है । सार तत्व यह है कि (वाग ओजः) सत्यवाणी के बलसे (सह ओजः) सहयोग का बल बढ़ जाता है । पारस्परिक एकता से (मयि प्राणापानौ) मुझमें दोषों की निवृति होकर प्राणशक्ति का संचार हो जाता है । मेरे जीवन में चार वेद उनके चार व्रतों के रूप में जीवन्त हो उठते हैं । पण्डित हरिशरण सिद्धान्तालंकार के इस पदार्थ में महर्षि दयानन्द का भावार्थ जोड़ दें तो मन्त्रार्थ में चार चाँद लग जायेगें । ''हे विद्वानों ! तुम लोगों के संग से मेरी ऋग्वेद के तुल्य प्रशंसनीय वाणी, यजुर्वेद के समाज मन, सामवेद के सदृश प्राण और सत्रह तत्वों से युक्त लिंग शरीर स्वस्थ, सब उपद्रवों से रहित और समर्थ होवे ।'' आपने देखा - वेद के साथ हामी भरने से मनुष्य के समग्र आचार-विचार-व्यवहार एवं व्यक्तित्व में निखार आ जाता है । उसके पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच कर्मेन्द्रियां, मन व बुद्धि रूपी सत्रह तत्व सुखर-मुखर-प्रखर ओजस्वी हो जाते हैं ।

लोक कल्याण का ध्येय धारणकर्त्ता शासन ऐसा प्रबन्धन करते थे कि वेद का सन्देश वातावरण में बहता रहे और जन जन 'संश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि' (अथर्व. 1.1.4) वेद के अनुकूल चलें प्रतिकूल नहीं । महात्मा विदुर ने अपना अनुभव व्यक्त करते हुए कहा है-श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चेव श्रुतानुगा । असम्भिन्नर्यमर्यादः पण्डिताख्यांलभेत च ।। विदुरनीति 1.30 ।। जिसका शास्त्रज्ञान विवेक बुद्धि शास्त्र ज्ञान के अनुकूल चलने वाली है, जो आर्य मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करता, वह व्यक्ति पण्डित कहलाता है ! ''बुद्धिश्रेष्ठानि कर्माणि बाहु मध्यानि भारत ! तानि जंघाजघन्यानि भारप्रत्यवराणि च ।।'' वि.नि. 3.74।। हे भारत ! बुद्धि से सिद्ध होने वाले कार्य उत्तम, भुजबल से होने वाले मध्यम,

जो लुक छिप कर भागदौड़ से किये जायें वे अधम और जो सिर पर संकट डाल दें वे कार्य नीचतर होते हैं। विश्व के प्रथम महर्षि सम्राट मनु ने '' वेदोऽखिलो धर्ममूलम्: (मनुस्मृति अध्याय 2 श्लोक 6) कहते हुए धर्म के चार मूलस्त्रोत वर्णित किये हैं-यथा अखिल वेद, स्मृति, सदाचार, आत्मा तुष्टि अर्थात् जिस कार्य के करने से आत्मा में भय, शंका व लज्जा न उत्पन्न हो अपितु सात्विक सन्तुष्टि व प्रसन्नता अनुभव हो, ये चार 'धर्ममूलम्' धर्म के मूलस्त्रोत व आधार हैं। राजाओं, राजपुरोहितों एवं राष्ट्र सेना नायकों ने सृष्टि के शुभारम्भ से करोड़ों वर्ष तलक धरती पर ऐसी ही सत्ता को स्थापित व सुख सम्पादित रक्खा। सभी कहते थे वेद-हां और पास नहीं आती थी- वेदना। वैदिक युगीन सम्राट वेद के प्रति इतने संवेदनशील थे कि वे वेद की अवज्ञा करने वालों को आर्यावर्त की वसुधा पर रहने नहीं देते थे। उनको मिटाते नहीं-बसाते थे। उन्हें विमान या जलयान में भरकर सागर पार कर देते थे और उनके लिए जीवन-यापन की व्यवस्था भी कर देते थे। इस तथ्य को मैं महर्षि के पूना-प्रवचन के आधार पर प्रकट कर रहा हूँ। कुछ सौ वर्ष पूर्व यही कार्य इंग्लैण्ड ने भी किया था, जिससे अमेरिका व आस्ट्रेलिया जैसे राष्ट्रों का उदय हुआ। आर्यावर्त में जहां वेद के अध्यात्म व विज्ञान में समन्वय किया जाता रहा है, वहीं ये द्वीप-द्वीपान्तर में नव गठित देश विज्ञान की भौतिक सुखदायी विभूतियों में रमण करने लगे। जहाँ इन्होंने विद्या अनुशासन, शोभा स्वच्छता व समृद्धि में असीम उन्नति की, वहाँ उन्होंने नैतिक सदाचार को दरनिकार कर दिया। इतने पर भी आर्यावर्त या भारत निखिल विश्व का चक्रवर्ती सम्राट बना रहा। रामायण काल में वेद के साथ हुई 'हाँ-ना' की उठा-पटक का उदाहरण यहाँ पर अप्रासंगिक नहीं होगा। राम चार भाई थे। रावण भी चार भाई थे। राम ने ऋषि वसिष्ठ-विश्वामित्र के गुरूकुलों में जाकर वेद की आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व व्यावहारिक शिक्षा ग्रहण की और उसका राष्ट्रोत्थान व जनकल्याण में वितरण किया। रावण ने भी तपस्या पूर्वक वेद का अध्ययन ही नहीं, प्रत्युत उसका भाष्य भी किया किन्तु वह वेद के अध्यात्म-दर्शन को एक ओर छोड़कर उसके विज्ञान-रथ पर आरूढ़ हो गया। 'माभ्राता भ्रातरं द्विक्षत्' (अथर्व 3.30.3) भाई-भाई से द्वेष न करें-वेद के इस आदेश के प्रति राम ने कहा-हाँ। चारों भाई हर सुखदा-विपदा की स्थिति में परस्पर आबद्ध बन्धु एक बने रहे। वेद वर्चस्व के लिए आततायियों के ध्वंस हेतु वनगमन की स्थिति में राम चित्रकूट धाम में रहें, तो अनुज भरत अयोध्या के सिंहासन पर नहीं जाकर नन्दीग्राम में रहे। इस वेद वाक्य को रावण ने भी पढ़ा था किन्तु गढ़ा नहीं। देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर द्वारा बसाई गई स्वर्णमयी लंका नगरी में ही जाकर अधिकार कर लिया, जिस पर सवारी करके अपने अग्रज कुबेर को तंग करने में तो लगा ही रहा, अपने अनुज भ्राताओं के वेदानुकूल सत्परामर्श को सुनकर भी कहता चला गया-ना-ना। परिणाम स्वरूप वेदानुयायी राम को उसका संहार कुछ इस प्रकार करना पड़ा, कि हर कोई कहने को विवश हो गया- ''एक लख पूत सवा लख नाती, ता रावण-घर दिया न बाती''। एक ईंट खिसकने से जैसे सम्पूर्ण दीवार दरकने लगती है, वैसे ही वेद-विरोधी अपसंस्कृतियों का अनमेल मिश्रण वेद के सुरक्षा कवच की कीलों को ढीला करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देता। राम-भरत भ्राताओं ने मन्थरा के विष-वमन को नीलकण्ठ बनकर उसे कण्ठ से नीचे उदर तक उतरने नहीं दिया। अपसंस्कृति का संवाहन महाभारत काल में मामा शकुनि बनकर आ गया, तो सेविका मन्थरा से उसके मामा का ममत्व संबन्ध भारी पड़ गया। वेद के भेद को बिना समझे दुर्योधन ने कह दिया था- ना, फिर तो उसने गुरू, पितामह, पिता-माता सभी के निर्देश ठुकरा कर कह दिया-ना-ना सर्वमान्य योग योद्धा श्री कृष्ण के सन्धि-प्रस्ताव के प्रति भी कह दिया था-ना-ना-ना। चक्र सुदर्शनधारी मुरली मनोहर माधव का उद्घोष- 'परित्राणाय साधूना विनाशायच दुष्कृताम्' सफलीभूत हुआ। निज सेना, सम्बन्धी, भाईयों के साथ दुर्योधन तो मारा ही गया, किन्तु सनातन वेद-संस्कृति के स्तम्भों को शिथिल कर गया। फल स्वरूप विगत पाँच सहस्र वर्षों के अन्तराल में वेद के लिए 'ना' कहने वाले अपना सर उठाने लगे। आर्यावर्त भारत के जो चिरन्तन आदर्श पुरूष या नारियाँ थीं उनके श्रेष्ठ शुद्ध जीवन-चरित्र में मिलावट करके उनकी उज्जवल छवि को अशुद्ध निकृष्ट बनाया जाने लगा। वेदों में पशु हिंसा-यज्ञों में पशुबलि प्रथायें चलाकर वेद विरोधी अनीश्वरवादी शक्तियों के पनपने का वातावरण बन गया। आदिशंकर ने इस भयावह स्थिति को ताड़कर बाल्यकाल से ही इन शक्तियों को परास्त तो कर दिया, किन्तु इसके लिये उन्हें युवावस्था में ही अपना बलिदान देना

पड़ा । पता नहीं उस दुष्काल में ऐसी कौन सी अति असह्य स्थिति थी कि वे कह गये- 'स्त्रीशूद्रोनाधीयाताम्' स्त्री व शूद्र वेद नहीं पढ़ सकते हैं । फलस्वरूप भारत की सर्वोदय समरसता में कुछ ऐसा रिसाव हो गया कि पारसी, यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम आदि मत-सम्प्रदाय पनप गये, और अपने को धर्म के नाम से प्रचारित करने लगे । वेद के लिये 'हां' कहने वालों की संख्या घटने लगी और 'ना' कहने वालों की संख्या बढ़ने लगी ।

युवा आग्नेय संन्यासी शंकराचार्य ने भारत को वैदिक, सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बाँधने के लिये पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण सर्व दिशाओं में मठ-पीठ स्थापित किये, किन्तु पवित्र गंगाजल सदृश वेद की सारस्वत धारा को जिस कलश में भरकर भारतभूमि में सर्वत्र रससिक्त करना चाहते थे, वह उसके एक ही छिद्र 'स्त्रीशूद्रोनाधीयताम्' के द्वारा बंजर में बहती चली गयी । सदभावना भासित वर्ण व्यवस्था, जाति-पांति, ऊंच-नीच, छूआछूत के भेदकारी व्रण-आवरण में फँसकर रह गयी । स्थिति इतनी संतापकारी सिद्ध हुई कि केरल के जिस पावन ग्राम कालडी में आदिशंकर का जन्म हुआ था, वहाँ एक भी वेद धर्मी घर नहीं बचा, सब विधर्मी हो चुके थे । अनेक शताब्दियों तक भारत माता की वीर सन्तानों को विधर्मियों का सामना करना पड़ा । बलात् धर्मान्तरण के विरोध में लाखों आर्य लाल व ललनाओं को इस अपना बलिदान देना पड़ा । अन्ततोगत्वा उन्नीवसीं शताब्दी में करूणा वरूणालय परमेश प्रभु ने आदि शंकर की परम्परा -परिमार्जन के लिये मूलशंकर को गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में अवतरित किया, जिन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती बनकर भारत की निरीह जनता को वेदों की ओर लौटने का सन्देश दिया । 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः' (यजु. 36.2) वेदवाणी सुनाकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अपने भृत्य व स्त्री आदि अति शूद्र अन्त्यज तक को कल्याणी वेद वाणी पढ़ने व सुनने का अधिकार प्रदान कर दिया । उन्होंने मनु के नाम पर जाति-पाँति के भेदभाव का पक्ष लेने वालों को ललकारते हुए इसे अवांछित प्रक्षिप्त सिद्ध करके उनके वास्तविक उद्घोष 'शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रकुल' (मनु. 10.65) अर्थात् जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के सदृश्य गुणवाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य हो जाये । ब्राह्मण क्षत्रिय-वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ शूद्र के सदृश्य हो तो शूद्र हो जाये । उत्तम स्त्री, नाना प्रकार के रत्न, विद्या, सत्य, पवित्रता श्रेष्ठ भाषण और नाना प्रकार की कारीगरी सब मनुष्य और सब देश से ग्रहण करें । सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास में मनु के इस निर्देश के होते हुए महाराज मनु पर नारी को वेदाधिकार से वंचित करने को आरोप नहीं लगाया जा सकता है । स्वामी दयानन्द के द्वारा महाराज मनु के अनुमोदन का सकारात्मक प्रतिफल मिलने लगा । भारत माता की प्रिय सन्तानों का अपने मूलधर्म में परावर्तन का द्वार खुल गया । यद्यपि विधर्मी भीषण आत्मघाती आतंकवाद व अत्याचार करके सम्पूर्ण विश्व में घनघोर चीत्कार व अशान्ति की विकराल वायु बहाने में लगे हैं । इतने पर भी शान्ति की प्रकाश रेखा कहीं न कहीं अपनी चमक दिखा जाती है जिससे वेद धर्म की जय जयकार हो जाती है । याद आ रहा है वह ब्राह्मण जो दिल्ली में प्रचार करता था-हिन्दु धर्म व इस्लाम धर्म दोनों ही मत अच्छे हैं बादशाह बहलोल लोदी ने उसे बुलवाया और कहा-हिन्दू मुसलमान दोनों मत बराबर क्यों कहते हो ? इस्लाम व कुफ्र समान कैसे हो सकते हैं । तुम मुसलमान बन जाओ नहीं तो मरने को तैयार हो जाओ । मना करने पर उसे महल के सामने ही जीवित अग्नि में भस्म कर दिया गया । दयानन्द व उनके अनेकशः मानव पुत्र को श्रद्धाञ्जलि दो, जो उनके शास्त्रार्थ व वेदभाष्य ने भारत में एक नव विहान का उदय कर दिया है और अलीगढ़ में ही इस्लाम वंश-वृक्ष के सुमन ''सत्य प्रचार केन्द्र'' संचालित करके प्रकाशित करते हैं - पुस्तक ''वेद और कुरान-एकता की ज्योति की ओर'' जिसमें इसके लेखक तारिक मुर्तजा ने कतिपय वेद मन्त्रों के साथ कुरान की आयतों की समतुल्य भावभूमि का निदर्शन कराया है । कुरान ही क्या कोई भी सम्प्रदायिक ग्रन्थ यदि नकारात्मक विचारों की छटनी व सकारात्मक विचारों की मंगनी के साथ प्रस्तुत किया जाता है तो दुर्भावना घटती है और सद्भावना बढ़ती है । यही तो वेद के लिये 'हां' है स्वीकृति है । वेद के साथ 'हां' जुड़ती है तो वेदना का 'ना' हटता है । मिटती है वेदना, मिलती है सान्त्वना । दयानन्द की वाणी में मुखर हो उठती है ईश्वरीय वाणी- 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है'

'वरेण्यम' अवन्तिका, (ए.डी.ए.) रामघाट मार्ग,

अलीगढ़ 202001

भारतीय संस्कृति के विनाश का पहला और बड़ा कारण-अंधश्रद्धा

डा. गंगा शरण आर्य

आज के वैज्ञानिक युग में, आधुनिकता के जमाने में हमें उन्नत देशों की भांति नए-नए अविष्कार कर हर प्रकार के साधनों से परिपूर्ण होने के अवसर मिले हैं । परन्तु ऐसा क्या कारण है जिससे हम प्राचीन काल के स्वर्णिम भारत के समान उन्नत न होकर केवल प्रगतिशील पहले पुरातन काल में चक्रवर्ती राज्य कहलाता था ऐसा क्या हो गया, हमसे क्या खो गया कि हमारा प्यारा भारतवर्ष आज पिछड़े देशों में सबसे बड़ा कारण हमारे लोगों का वेदानुसार आचरण था । लेकिन पोपलीला के कारण जब पुराणों का प्रकाश हुआ तब सब कुछ विकृत हो गया । लोगों के आचरण धीरे-धीरे क्षीण होते गए और ईश्वरोपासना के स्थान पर मूर्ति-पूजा, श्राद्ध,मृत्यु-भोज, केदारनाथ, ब्रदीनाथ आदि चार धाम की यात्रा, देवी जागरण, भूत-प्रेत व झाड़-फूंक, गंगा स्थान पर मूर्ति-पूजा, श्राद्ध, मृत्यु-भोज, केदारनाथ, बद्रीनाथ आदि चार धाम की यात्रा, देवी जागरण, भूत-प्रेत व झाड़-फूंक, गंगा स्नान, कावड़, बलि प्रथा, सती प्रथा, राधा कृष्ण प्रेम प्रसंग (रासलीला) फलित ज्योतिष आदि-आदि (इतने विषय है कि गिनना कठिन होगा) का प्रचार वेदों के नाम पर होने लगा । पुराणों ने हमारे इतिहास को, हमारी सामाजिक व्यवस्था का विकृत कर दिया है वेदों से जहाँ हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें सदैव सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने को उद्यत रहना चाहिए वहीं पुराण इसके विपरीत है पौराणिक पाखण्डियों के अनुसार जो भी उनमें लिखा है जैसा लिखा है वैसा मान लेना चाहिए विचार-विरोध न करना चाहिए । वेदों का नाम लेकर ऋषियों का नाम लेकर, श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं महात्मा शिव आदि महापुरूषों का नाम लेकर जो पाखण्ड इन पण्डों ने फैलाया है उसका तो क्या कहें सारे विनाश की जड़ ही यही है । आदर्शवादी मर्यादा पुरूषोत्तम राम पूजनीय हैं । उनके सत्कार्यो के अनुरूप ही उन्हें भगवान की उपाधि मिली लेकिन आज उनकी मूर्ति बनाकर उनके आचरण को, उनके चरित्र को आदर्श (अनुकरणीय) ना मानकर, उनके चित्र की पूजा प्रारम्भ कर दी श्रीराम ने वेदादि आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया, यज्ञ किए तथा कराए क्या हम करते हैं ? क्या इन पंडितों ने श्री राम के ही अनुरूप वेदादि शास्त्रों को पढ़ा है ? नहीं । क्योंकि यदि स्वयं पढ़ा होता व क्षत्रियों को पढ़ाया होता वैसा ही आचरण करते तो ढोंग और पाखण्ड का जो बोल-बाला चारों ओर आज दीख पड़ता है वह कदापि नहीं होता । वरन् जिस प्रकार राम राज्य था उसी प्रकार हमारा देश आज भी उन्नति करता और विश्वगुरू की पद्वी पर ही रहता । हम पाश्चत्य मात्र भौतिकता का अंधानुकरण न कर अपने देश की सभ्यता व संस्कृति की गौरव गरिमा को और ऊँचा उठाते ।

क्या जिस प्रकार इन पाखंडियों ने, पेटार्थी पोपों ने श्री कृष्ण के चरित्र को उछाला है उसी प्रकार आपके सुपुत्र के चरित्र को कई उछाले तो आप चुप रहेंगे ? कहते हैं गृहस्थ में रहते हुए श्री कृष्ण जैसा ब्रह्मचारी संसार में अभी तक दूसरा नहीं हुआ, उन्होंने विवाह को व्यभिचार का अड्डा न बनाकर रूकमणी के साथ तपस्या की थी, 12 वर्ष तक दोनों ने वेदादि का अध्ययन और कड़ी साधना के पश्चात एक बार पुत्र प्राप्ति की शुभेच्छा से सहवास किया था तत्पश्चात आजीवन ब्रह्मचारी रहें दोनों । क्या आज है किसी पंड़े में इतना दम ? ये तो केवल ब्रह्मचारी और योगी को व्यभिचारी व भोगी बना सकते हैं । मात्र अपनी विलासिता के लिए । मैं पाठकों से प्रश्न करती हूँ, उन माताओं, बहनों व भाईयों से प्रश्न करती हूँ कि आजकल के पंडितों द्वारा मंदिरों में जिस किस्म के कृष्ण का बखान किया जाता है उस किस्म के लड़के से क्या वे अपनी बेटी का विवाह कर सकते हैं ? मैं तो ऐसा कदापि नहीं कर सकती तो सोचिए जरा विचार करिए आप क्या कर रहे हैं ? अपने बुद्धि के पट्ट खोलिए और आज ही अपने घर में से बांसुरी वाले और राधा-कृष्ण के साथ वाले चित्रों और मूर्तियों को तोड़-फोड़कर बाहर फेंक दें जैसा कि महर्षि दयानन्द के समय में हुआ था और महाभारत में बताए गए असली सुदर्शन चक्रधारी, राष्ट्रवादी और योगीराज श्रीकृष्ण के उस चित्र को लगाएं जिसमें स्वयं अर्जुन का सारथी बनकर राष्ट्रविरोधी और पापी शासकों को परास्त किया था ।

महाभारत के पश्चात वेद विद्या की क्षीणता के कारण, गुरूकुल आश्रम भी कम होते गए । आश्रम व वर्ण व्यवस्था विकृत हो गई । वर्ण व्यवस्था प्राचीन काल में कर्म पर आधारित थी अब जन्म पर आधारित हो गई । वेदों को ना पढ़ने वाले भी स्वयं को चतुर्वेदी, द्विवेदी आदि-आदि ब्राह्मण कहलाने लगे और वेदों का

पठन-पाठन छूट जाने से लोग वेद ज्ञान से शून्य होते चले गए और अब तो आलम ये है कि न संस्कारों का ज्ञान रहा, न संस्कृत भाषा का । प्राचीन समय में तो हमारी सामान्य बोलचाल की भाषा ही संस्कृत हुआ करती थी । संस्कृत का ज्ञान ना होने से उनके मनमाने अर्थों को मानना पड़ा । अज्ञानतावश हम अंधश्रद्धा, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, भूत-प्रेत आदि के जाल में फंस कर दुखी रहने लगे । हमारी आर्थिक स्थिति जर्जर होती गयी और ये पाखण्डी ''कमाएगी दुनिया खाएंगे हम'' की सोच रखते हुए लोगों की मानसिक कमजोरी (अभिशाप और वरदान के चक्कर में फंसे हुए) का लाभ उठाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार कर आज मीडिया तक पहुँच गए । और समस्त देश को ही नहीं विदेशों में भी रहने वाले हमारे भाई-बहनों को राम कृष्ण द्वारा अपनाई गई जीवन शैली से विमुख कर रहे हैं । ये अपने को श्री कृष्ण का, श्री राम का भक्त कहने लगे । क्या इन पाखण्डियों को गुरू शब्द का वास्तविक अर्थ पता है?

गुरू का वास्तविक अर्थ होता है सद्ज्ञान की ओर प्रेरित करने वाला लेकिन इनके किस्से कहानी तो भगवान राम और कृष्ण के चरित्र एवं महात्मा शिव के चरित्र का जो ये झूठा दर्शन कराते है वहीं समाप्त हो जाते हैं । मेरा यह मानना है यदि आपको अपनी बुद्धि की कसौटी पर खरी लगे तो धारण कर लेना । ये पाखण्डी, पोप और पंडे व गुरू कहते हैं कि श्री कृष्ण और राम एवं महात्मा शिव, हनुमान, विष्णु, ब्रह्मा, महेश आदि ये ईश्वर के अवतार है, भगवान हैं । भगवान तो मैं भी मान लेती हूँ लेकिन सृष्टि रचियता ईश्वर नहीं । क्योंकि इन्होंने अपने जीवन काल में अनेक अच्छे कार्य निःस्वार्थ भाव से किए और प्राचीन काल में अच्छे कार्यों को करने वाले व्यक्तियों को भगवान की संज्ञा दी जाती थी लेकिन इन्हें केवल इन्हें ही ईश्वर का अवतार कहें तो ऐसा कहना गलत होगा क्योंकि अवतार कहते हैं अवतरण को जो हम सभी का संसार में हुआ है और भूमि, गगन, वायु, अग्नि, नीर इन पांचों तत्वों से हमारा शरीर बना है । इन भगवानों का शरीर भी इन्हीं तत्वों से बना है । ईश्वर ने हम को किसी ना किसी उद्देश्य से ही संसार में भेजा है । अच्छा मुझे एक बात बताओ कि क्या ईश्वर कण-कण में नहीं समाया है? समाया है ना, हाँ समाया है तो मूर्ति में भी तो है, हाँ है मैं भी मानती हूँ, लेकिन जब परमात्मा या ईश्वर कण-कण में समाया है सारी सृष्टि में उसका वास है तो फिर हम केवल मूर्ति पूजा क्यों करें मन्दिर में ही क्यों जाएं, चढ़ावा चढ़ाएं हमें तो अपने घर में पड़ी हुई प्रत्येक वस्तु की पूजा अर्चना करनी चाहिए यहाँ तक कि चप्पल जूते आदि की भी उसमें भी तो ईश्वर है । टॉयलट इत्यादि की सीट,ब्रश, झाड़ू आदि की उनमें भी तो ईश्वर है क्योंकि कण-कण में है तो उनमें भी तो है फिर मन्दिर ही क्यों, वहां भी चढ़ावा चढ़ा सकते हैं आखिर तो मन्दिर में भी हम अपनी मानसिक गन्दगी का पश्चाताप मूर्तियों रूप भगवान के समक्ष करते हैं यहां तो शारीरिक गन्दगी भी साफ हो रही हैं क्यों नहीं कर सकते बताओं,जरा क्या फर्क पड़ता है भला एक पंथ दो काज हो जाएगें । शरीर की तो गन्दगी साफ हो ही रही है, मन की भी कर लेंगे । अच्छा हम कहते है ना कि बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं तो क्या हम बच्चों को भगवान मानकर उनकी पूजा करते हैं ? क्या उनको भगवान मानकर उन्हें शिक्षा-दीक्षा देना बंद कर देते है? नहीं । बस यहीं तो समझना है भगवान तो कण-कण में बसा है चाहे जड़ हो या चेतन लेकिन उसकी प्राप्ति मन्दिर में नहीं होगी । वह हमें किसी पत्थर, जूते चप्पल या वस्तु में नहीं मिलेगा वहीं मिलेगा जहां हम भी हैं । और हम कहां रहते हैं, हमने कभी जानने का प्रयास ही नहीं किया । हमारा मतलब यहां हमारे शरीर से नहीं वरन् हमारी आत्मा से है क्योंकि हमारा शरीर भी तो जड़ है और इसी जड़वत शरीर रूप वृक्ष के फलों को भोग रहा, दूसरा देख रहा है, तो कहां मिलेगा वहां जहां हम हैं । हमारा मन तो सदा बहिर्मुखी होता है क्योंकि अंतर्साधना तो कभी की नहीं, केवल बाहरी दिखावे में रहें, मन्दिरों में स्थापित मूर्ति को ही भगवान या ईश्वर समझकर साधना करते रहे । याद रखना हमारी (आत्मा) और परमात्मा के बीच केवल ज्ञान की दूरी है, स्थान की नहीं । हम पाखण्डियों के बहकावे में आकर नाना (काशी, हरिद्वार, बद्रीनाथ, काबा आदि) स्थानों में जाकर भगवान को ढूंढते हैं सो गलत है ।

लेकिन यदि देश अथवा स्थान की दूरी होती तो हम परमात्मा को सर्वत्र व्यापक नहीं कह सकते थे क्योंकि परमात्मा तो बद्रीनाथ में भी है यहां हमारे अन्दर भी तो स्थान या देश की तो दूरी नहीं है और न ही काल की दूरी है क्योंकि मंदिर रात को बंद हो जाते है, ताले लग जाते है मन्दिरों के, तो क्या हमें रात में भगवान से प्रार्थना करनी हो, भगवान के दर्शन करने हो तो क्या हम मन्दिर में ताले खुलवाते हैं ? नहीं, हम आँखे बंद करके अपने मन-मन में प्रार्थना करते है सुबह तक ताले खुलने का इंतजार नहीं करते क्योंकि असलियत अर्थात् सच्चाई हमें भी पता है कि भगवान हमारे भीतर ही है -

शेष अगले अंक में

आर्य सन्देश से साभार

- काव्य सलिला -

देश की सोचो

ओमप्रकाश बजाज

मंदिर मस्जिद मुद्दे पर
क्यों मचा रहे घमासान,
बात समझौते की करे न कोई
हो रही खींचातान,
राम और रहीम के बीच में
पिस रहा है इन्सान,
नेता सेंक रहें हैं रोटी
देश हो रहा हलाकान,
साधु संत भी ज्ञान ध्यान तज
देते फिर रहे बयान,
भाई मेरे देश की सोचो
बनो न यूं नादान,
ऐसा कोई मिल कर ढूंढो
सर्व सम्मत समाधान,
हर धर्म की आस्था का
ऐसा आदर्श बने वह स्थान,
सर्व धर्म समभाव की
हो जो अलग एक पहचान,
जिस का लक्ष्य मात्र एक हो
जन जन का कल्याण,
एक स्वर से तब सब बोलें
मेरा भारत महान.

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001 म.प्र.
फोनः 0761-2426820 मोः 982649675

.....***.....

दयानन्द सूक्ति-संग्रह

बाल-शिक्षा

* जब पाँच-पाँच वर्ष के लड़का और लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्यदेशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। कन्याओं और कुमारों में राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पाँचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के और लड़कियों को घर में ना रखें।

-स.प्र.,समु.३,पृ.३७

* जो विद्या-धर्म विरूद्ध भ्रान्ति में गिराने वाले व्यवहार हैं, उनका भी उपदेश कर दें, जिससे भूत,प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

-स.प्र.,समु.३,पृ.२९-३०

* प्रथम लड़कों का यज्ञोपवित घर में हो और दूसरा आचार्यकुल में हो। पिता, माता वा अध्यापक अपने लड़के लड़कियों को अर्थ सहित गायत्री मंत्र का उपदेश कर दें। -स.प्र.,समु.३,पृ.३७

* जन्म से पाँचवें वर्ष तक बालकों को माता, ६ वर्ष से ८ वर्ष तक पिता शिक्षा करे और ९ वर्ष के प्रारम्भ में द्विज अपने सन्तानों का उपनयन करके आचार्यकुल में अर्थात् जहाँ पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों, वहाँ लड़के और लड़कियों को भेज दें। और शूद्रादि वर्ण उपनयन किये बिना विद्याभ्यास के लिए गुरूकुल में भेज दें। -स.प्र.,समु.२,पृ.३३

* जो माता-पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं, वे जानो अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों व शिष्यों का लाड़न करते हैं, वे अपने सन्तानों और शिष्यों को विष पिलाकर नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। -स.प्र.,समु.२

* उन्हीं के सन्तान विद्वान्, सभ्य और सुशिक्षित होते हैं, जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते, किन्तु ताड़ना ही करते रहते है।

-स.प्र.समु.२,पृ.३३

* गुरू, माता, पिता और जो सत्य का ग्रहण करावे और असत्य को छुड़ावे वह भी गुरू कहाता है। -स.प्र.समु.२,पृ.३३

* सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावयुक्त आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।

-स.प्र.समु.३,पृ.३६

संकलनकर्त्ता - वेदाचार्य डॉ. रधुवीर वेदालंकार

आर्यसमाज से सम्बन्धित प्रमुख वैबसाइट्स

SARVADESHIK ARYA PRATINIDHI SABHA	www.aryasabha.com
DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA (INDIA)	www.delhisabha.com
SATYARIHPRAKSH	www.satyarthprakash.com
SWAMI DAYANAND SARASWATI	www.swamidayanand.com
ARYA MAHASAMMELAN	www.aryamahasmmelan.com
ARYA KENDRIYA SABHA, DELHI (INDIA)	www.aryakendriyasbaha.com
ARYA VEER DAL, DELHI (INDIA)	www.aryaveerdal.org
ARYA SAMAJ TANKARA (INDIA)	www.tankara.com
ARYA SAMAJ VISAKHAPATNAM (INDIA)	www.vediclife.in
PAROPKARINI SABHA, AJMER (INDIA)	www.paropkarini,org
ARYA SWARNIKAR ROHTAK (INDIA)	www.geocities.com/aryaswarnkar
ARYA SAMAJ GANDHIDHAM (INDIA)	www.aryagan.org
ARYA SAMAJ JAMNAGAR (INDIA)	www.aryasamajjamnagar.org
ARYA PRATINIDHI SABHA OF AUSTRALIA	www.aryasamajaustralia.com
ARYA SAMAJ VICTORIA (AUSTRALIA)	www.victoriaaryasamaj.org
ARYA SAMAJ MELBOURNE (AUSTRALIA)	www.aryasamajofmelboume.com
ARYA SANAJ OF AUSTRALIA (AUSTRALIA)	www.aryasamaj.org.au
INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMEAN SURINAME	mahasammelan2009surinama.org
ARYA PRATINIDHI SABHA DURBAN (SOUTHAFRICA)	www.apssa.co.za
ARYA PRATINIDHI SABHA NEW ZEALAND	www.aryasamajnz.org
ARYA PRATINIDHI SABHAAMERICA (USA)	www.aryasamaj.com
ARYA SAMAJ GREATER HOUSTAN (USA)	www.aryasamajhouston.com
ARYA SAMAJ NEW JERSEY (USA)	www.aryasamajofnj.com
ARYA SAMAJ SUBURBAN (USA)	www.aryasamaj.net/events/hvm.html
ARYA SPIRITUAL CENTER NEW YORK (USA)	www.aryaspiritualcenter.com
GUYANA CENTRAL ARYA SAMAJ (SOUTHAMERICA)	www.aryasamaj.org.gy
ARYA SAMAJ GARDEN STATE BELL EVILLE (USA)	www.omtemplenj.org
GREATER ATLANTA VEDIC TEMPLE LILBURN (USA)	www.geocities.com
VEDIC CALTURE CENTER TORANTO (N.AMERICA)	www.vedicculturalcentre.com
ARYA SAMAJ SOUTHERN CALIFORNIA	www.aryasamajsocal.org
ARYA PRATINIDHI SABHA OF FIJI (SAMABULAFIJI)	www.aryasamaj.org.fj
HINDU VEDIC MANDIR (USA)	www.aryasamaj.net
CHHATISGARH ARYA PRATINIDHI SABHA	www.cgaryapratinidhisabha.com

॥ कुछ शब्दों में भूल की सम्भावना है ॥

टीप-यदि इनके अतिरिक्त और साइटस हों तो सूचित करें जिससे लोग लाभान्वित हो सकें ।

रोग मुक्ति की कहानी

वर्षों का दवा-उपचार व्यर्थ गया, बिना दवा के दो माह में रोग-मुक्ति

राम सजीवन गुप्ता

मैं इस समय 72 वर्ष का हूं। 24 वर्ष पहले पेट में दर्द हुआ था। फिर लगातार कब्ज रहने लगा। कब्ज के निवारण के लिए उपाय करने लगा। ईसबगोल की भूसी मठ्ठेमें फूलाकर लेना शुरू किया। माह-दो-माह आराम महसूस हुआ। फिर आंव शुरू हो गयी और कब्ज भी। इस बार कब्जियत से छुटकारा पाने के लिए दूधमें मुनक्का उबालकर रात में लेना शुरू किया। यह सिलसिला लम्बे समय तक चला।

आज से 7 वर्ष पूर्व रात में पेशाब करने के बाद गश्त आ गया था, जिससे चिन्ता बढ़ गयी। इसके लिए जबलपुर गया। डाक्टर ने सी.टी. स्कैन कराया। रिपोर्ट मिली, उसे डाक्टर को दिखाया। डाक्टर ने रिपोर्ट देखकर बताया कि सिर की नस में खून का थक्का बन गया है। अब इस संकट से बचने का प्रयास शुरू हुआ।

कब्जियत के लिए मुनक्केका सेवन का जो क्रम शुरू किया था, वह भी कारगर साबित नहीं हुआ। फिर कब्ज की समस्या जस-की-तस हो गयी। अब इसके लिए फिर एलोपैथी की दवा शुरू की। कोई भी विश्वास नहीं करेगा कि कब्ज दूर करने के लिए मैंने लगातार एक साल तक ऐलोपैथी की दवा ली, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। फिर सतना गया और डाक्टर से दिखाया। सतना के डाक्टर की दवा भी चली, मगर इससे भी कोई फायदा नहीं हुआ।

इस बीच हड्डी टूट जाने का दूसरा कष्ट आ गया। हड्डी की टूट के इलाज के लिए वहां चिकित्सालय में भर्ती हुआ। उस दौरान तीन दिनों तक शौच हुआ ही नहीं। किसी ने साबुन-युक्त एनिमा लेने की सलाह दी। मैंने वैसा किया, लेकिन समस्या जहां-की-तहां रही। शौच आया ही नहीं।

फिर पेट रोग के विशेषज्ञ डाक्टर के पास गया। उनकी दवा शुरू हुई। इस इलाज से शौच होना शुरू हुआ। राहत मिली। यह इलाज भी दो साल तक चला। दवा सेवन छोड़ देने के बाद फिर कब्ज शुरू हुई। अब तो गणेश क्रिया के द्वारा ही मल निकालने की मजबूरी हो गयी। जबलपुर के दो-तीन डाक्टरों से इलाज लिया। इन सबकी दवा चलाकर देखा। कुछ दिन आराम महसूस होता था, फिर कब्ज और आंव का सिलसिला शुरू हो जाता।

बाद में नागपुर गया। वहां इंडोस्कोपी और अल्ट्रासाण्ड कराया। डाक्टर ने बताया कि पेट में छाला हो गया है। वहां की दवा भी दो-तीन महीने चली। फायदा नहीं हुआ। कुछ नये कष्ट शुरू हो गये सिरदर्द, छाती में दर्द तथा गैस।

फिर दिल्ली गया। वहां भी डाक्टरों ने दवा लिखी। एक महीने तक दवा चलायी। दवा-सेवन के बाद शरीर में जलन, मन में घबराहट और कमजोरी महसूस होने लगी। शरीर का वजन तीन किलोग्राम घट गया। सबेरे शौच के क्रम में कमजोरी लगती थी।

एलोपैथी दवा छोड़कर आयुर्वेद की दवा शुरू कर दी। चित्रकूट निरोगधामके वैद्य ने दवा दी। वैद्य जी ने बताया कि अब पेट साफ होगा और कमजोरी चली जायेगी। लेकिन आयुर्वेदिक दवा से कोई लाभ नहीं हुआ। आंव बनने की रफ्तार बढ़ गयी। पेट में मरोड़ का हाल इस कदर होता था कि दिन भर चीखता-चिल्लाता रहता।

मैंने जीवन की आशा छोड़ दी। मेरे दामाद ने मेरी स्थिति से चिंतित होकर दवा का रास्ता छोड़ने की सलाह दी। उन्होंने गोरखपुर जाकर आरोग्य मंदिन में भर्ती होने के लिए कहा।

मैंने आरोग्य मंदिर के संचालक को पत्र लिखा। सात-आठ दिनों बाद वहां से फोन आया कि आप आ जाइये, दो महीने में ठीक हो जायेंगे।

मैं 16 अक्टूबर, 2012 को आरोग्य मंदिर पहुंच गया। प्राकृतिक चिकित्सा के उस अस्पताल को देखकर बहुत अच्छा लगा। वहां के प्रधान चिकित्सक को अपनी राम-कहानी सुनायी। अनेक जगहों के डाक्टरों द्वारा किये गये इलाज के पर्चे देखे। मेरी चिकित्सा-पुस्तिका बनायी गयी।

आर्य जगत के समाचार

प्रेस विज्ञप्ति

आर्य परिवार युवक-युवती पांचवा वैवाहिक परिचय सम्मेलन रविवार, 14 जुलाई को अब तक 200 से अधिक रिश्ते हुए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पांचवा आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आगामी 14 जुलाई 2013 रविवार को प्रातः 10 बजे आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2 नई दिल्ली पर आयोजित किया जा रहा है ।

इस बार इस की उपयोगिता का दायरा बढ़ाते हुये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री अर्जुन देव चढ्डा को आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन का राष्ट्रीय संयोजक मनोनीत किया है ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने बताया कि आर्य परिवारों में आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन के प्रति काफी उत्साह है तथा वे अपने विवाह योग्य बच्चों के रजिस्ट्रेशन करा रहे हैं ।

श्री विनय आर्य ने बताया कि बायोडाटा फार्म भरकर साथ में 200 रूपये का ड्राफ्ट अथवा मनी ऑर्डर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 के पते पर भेजकर रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं । रजिस्ट्रेशन फार्म मो. नं. 09540040339 (श्री विजय आर्य) पर अपने डाक का पता भेजकर मंगा सकते है, अथवा हमारी वेबसाईट www.thearyasamaj.org से डाउन लोड भी कर सकते हैं । रजिस्ट्रशन फार्म 30 जून, 2013 तक सभा कार्यालय में भिजवा देवें, जिससे आशार्थी का नाम परिचय विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके । सम्मेलन में भाग लेने बाहर से आये आर्य परिवारों के ठहरने, चाय-नाश्ते व दोपहर के भोजन की निःशुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी ।

-अर्जुन देव चढ्डा, राष्ट्रीय संयोजक

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर -

आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर जिले के समस्त आर्य समाज एवं जन सहयोग से पर्यावरण शुद्धि एवं विश्व शांति हेतु 51 कुण्डीय महायज्ञ 21 अप्रैल 2013 रविवार को वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आयोजित किया गया ।

यज्ञोपरान्त विद्यालय हॉल (दयानन्द भवन) में आर्य विद्वानों के भजन एवं प्रवचन कार्यक्रम हुआ । स्वामी प्रणवानन्दजी, गुरूकुल गौतम नगर; स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती, वैदिक आश्रम विपराली, सत्यव्रत सामवेदीजी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान एवं आचार्य देवव्रतजी, संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल को आर्य कन्या विद्यालय समिति प्रधान जगदीश प्रसाद गुप्ता,

---

.....पिछले पृष्ठ का शेष भाग

मेरा इलाज शुरू हो गया । पहला दिन पेट पर मिट्टी की पट्टी और एनिमा दी गयी । शाम में पेट की गरम-ठंडी सेंक का उपचार मिला ।

मैं सुबह नियमित रूप से कटिस्नान लेने लगा और उसके बाद एक घंटा तेजी से टहलने का कार्यक्रम । दिन में गरम-ठंडा कटिस्नान । मैं सुबह पानी में दो चम्मच शहद लेता, फिर रात में भिंगोया हुआ मुनक्का 40 ग्राम, छीला हुआ सेव 240 ग्राम नाश्ते में - फिर दोपहर में रोटी-दलिया, सब्जी । रात में भी यही भोजन ।

20-24 दिनों के बाद खुद-ब-खुद, एनिमा के बिना, शौच होने लगा । डाक्टर ने जितना समय कहा था, उसी के अंदर मेरी समस्या समाप्त हो गयी । डाक्टर ने सलाह दी कि यहां से जाने के बाद घर पर भी दो महीने तक यहां की तरह बनाया भोजन-नाश्ता लेते रहियेगा । मैं 18-12-2012 को वहां से घर के लिए रवाना हुआ ।

अजयगढ़,पन्ना म.प्र.
आरोग्य से साभार

उपप्रधान अशोक आर्य, मंत्री प्रदीप आर्य, संयोजिका एवं निदेशक कमला शर्मा, डॉ राजेन्द्र आर्य एवं डॉ. एस.सी. मिततल ने 51 किलो की माला पहनाकर स्वागत किया गया । कार्यक्रम ईश वन्दना से प्रारंभ हुआ । तत्पश्चात ब्रह्मचारी द्वारा प्रस्तुत भजन किया गया । आचार्य देवव्रतजी के अनुसार यज्ञ का मुख्य रूप परमात्मा है तथा मनुष्य का शरीर यज्ञ मय है, यज्ञ सब प्रकार के एश्वर्य की वृद्धि करता है । यज्ञ पर्यावरण को शुद्ध करता है ।

स्वामी सुमेधानन्दजी ने बताया कि समस्त संसार भौतिकता की तरफ बढ़ रहा है । यज्ञ करने से ही अन्न एवं जल मिलेगा, वेद मंत्रों से मन को शांति मिलती है । विश्वशान्ति के लिए यज्ञ को स्थापित करना होगा । स्वामी प्रणवानन्दजी ने कहा कि हमें जीवन में परोपकारी बनना चाहिए । मनुष्य को हर वस्तु का बाँटकर उपयोग करना चाहिए । मनुष्य जो देगा उसके दस गुणा पाएगा । यज्ञ से मानवता आती है तथा यज्ञ से ही पर्यावरण की शुद्धि होती है । यज्ञ में जो आहुति देते हैं वह ही हमें शुद्ध वातावरण के रूप में प्राप्त होता है । सत्यव्रत सामवेदी जी ने विश्वशांति का संदेश देते हुए ओ३म् के महत्व पर प्रकाश डाला । अमर मुनि जी ने मंच संचालन किया । अंत में प्रधान जी ने कार्यक्रम में उपस्थित समस्त अतिथिगण एवं सभासदों के प्रति आभार प्रकट किया ।

आचार्य रामनाथ वेदालंकार -

आर्य समाज तथा वैदिक साहित्य के क्षेत्र में डॉ. रामनाथ वेदालंकार का स्थान ऐतिहासिक है । श्री रामनाथ जी का जन्म 7 जुलाई 1914 को श्री गोपाल राम के घर पर फरीदपुर, बरेली, उ.प्र. में हुआ था । पिताजी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे तथा महर्षि के परम भक्त थे । आपने श्री रामप्रसाद को गुरूकुल कांगड़ी में प्रवेश दिलाया जहां उन्होंने 14 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की । 1951 में आपने आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत साहित्य में एम.ए. की उपाधि ली । बाद में गुरूकुल कांगड़ी वि.वि. में आ गए । यहां वे 38 वर्ष तक विभिन्न विषयों के प्राध्यापक रहे । बाद में विभागाध्यक्ष रहे । तथा कुल सचिव आचार्य एवं उपकुलपति के पदों को सुशोभित किया । उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा 'विद्या मार्तण्ड' की मानोपाधि से सम्मानित किया गया । अपने बहुविद् ज्ञान तथा शोध आदि की क्षमता के कारण उन्हें पंजाब विश्वविद्यालय में महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ का आचार्य एवं अध्यक्ष नियुक्त किया गया । श्री रामनाथ जी को राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत के 'विशिष्ट विद्वान' के रूप में सम्मानित किया गया ।

आप कलम के धनी थे । सामवेद भाष्य, वेदों की वर्णन शैलियां, वेद भाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियाएं आदि उनकी अमूल्य कृतियां हैं । उनका साहित्य जहां विद्वानों के लिए रहा है वहां सर्वसाधारण की ज्ञान पिपासा की तृप्ति प्रदान करता है । आपके निधन से आर्यजगत को अपूरणीय क्षति हुई है । आपका साहित्य एवं आपके द्वारा तैयार विद्वान उनकी स्मृति को ताजा रखेंगे । एक सुखद बात यह कि उनके सुपुत्र विनोद चन्द्र विद्यालंकार उनके पद चिन्हों पर चलकर योगदान दे रहे हैं ।

श्री रमेशचन्द्र शास्त्री का निधन -

पिछले दिनों प्रसिद्ध विद्वान श्री रमेश चन्द्र जी शास्त्री का निधन हो गया । अपनी विशिष्ट शैली अर्थात तर्क, बुद्धि तथा शास्त्रार्थ के ढंग पर प्रवचन देने वाले विद्वान का चले जाना अपूर्णीय क्षति है ।

श्री गौरीशंकर कौशल, भोपाल, नहीं रहे -

आर्य वीर दल तथा आर्य समाज के क्षेत्र में मध्य भारत क्षेत्र के तृणमूल कार्यकर्त्ता श्री गौरीशंकर कौशल थे । श्री कौशल जी ने आर्यवीर दल, आर्य समाज व प्रतिनिधि सभा के विभिन्न पदों को सुशोभित किया। इस क्षेत्र में आर्य समाज के जो भी कार्य हुए हैं उनमें श्री कौशल जी का बहुमूल्य योगदान रहा है । भोपाल में राजनैतिक क्षेत्र में भी वे एक जाने माने कार्यकर्त्ता व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे हैं । 2 बार वे विधान सभा के सदस्य रहे । विधान सभा सदस्य के रूप में प्रदेश की आर्य समाजों को जो कठिनाईयां आती रहीं उनको सुलाझने में उन्होंने सक्रिय योगदान किया । 2006 में सार्वदेशिक स्तर पर आर्य महा सम्मेलन में उन्हें अभिनन्दित किया गया था । हिन्दी रक्षा आदोलन तथा अन्य आदोलनों में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई । आर्य कार्यकर्त्ता तैयार करने की क्षमता रखते थे । आपके निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है ।

दिवंगत विद्वानों एवं कार्यकर्त्ताओं के प्रति 'आर्य सेवक' परिवार तथा प्रतिनिधि सभा श्रद्धा सुमन अर्पित करती है ।

.....***.....

आर्य प्रतिनिधि सभा क्षेत्र की सूचनाएं एवं समाचार

श्री वरूण पटेल तैराकी में चौथी बार चैम्पियन

आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर, के संस्थापक सदस्य स्व. शम्भूनाथ चौधरी के प्रपौत्र एवं इसी समाज के उत्साही पुस्तकाध्यक्ष ई. श्री राजेन्द्र पटेल एवं डॉ. विभा पटेल के पुत्र ने म.प्र. राज्य स्तरीय ओपन तैराकी प्रतियोगिता आयु वर्ग 12 से 14 में व्यक्तिगत चैम्पियनशिप प्राप्त की । इस प्रतियोगिता में वरूण ने विभिन्न 5 स्वर्ण पदक प्राप्त किए हैं । इन्होंने इस प्रतियोगिता में जबलपुर नगर का नाम रोशन किया है । साथ ही आर्य समाज भी गौरवान्वित हुई है । हार्दिक बधाईयां ।

.....***.....

बाल वाटिका

अतिथि यज्ञ

संस्कृत के विद्वान् महाकवि माघ को कौन नहीं जानता । उन पर सरस्वती और लक्ष्मी दोनों की ही कृपा थी । 'शिशुपाल वध' जैसी अनेक उत्कृष्ट रचनाओं के रचयिता माघ को राजा की असीम अनुकम्पा मिलती ही रहती थी । माघ में एक खास बात और थी। वे परोपकारी और उदारमना भी थे । जो उनके द्वार पर आता, कभी खाली हाथ नहीं लौटता था । एक बार ऐसा हुआ कि लोगों को सहायता देते देते उनका सारा धन समाप्त हो गया । वे स्वयं अति निर्धन हो गए । फिर भी उनका मन पूर्ववत् उदार बना रहा । एक दिन की बात है । वे अपने घर के अहाते में बैठे थे और उनकी पत्नी अंदर कमरे में सो रही थी । माघ वहाँ बैठे-बैठे काव्य रचनाओं में अनुरक्त थे । तभी एक निर्धन ब्राह्मण उनके पास आकर अत्यन्त विनीत स्वर में बोला-'कविराज! आपका नाम सुनकर मैं अवंतिका से चलकर आया हूँ । आप मेरी आर्थिक मदद कीजिए । माघ बोले 'बन्धु तुम मेरे पास ऐसे समय में आये हो, जब मैं स्वयं निर्धन व साधनहीन हूँ । तुम्हें कुछ देने की स्थिति में नही हूँ ।'

यह सुनकर वह ब्राह्मण बहुत निराश हुआ । इसे अपना दुर्भाग्य मानकर वह लौटने लगा । संवेदनशील माघ ने ब्राह्मण के चेहरे पर व्यक्त हो रही व्यथा देखी तो उनसे सहन नहीं हुई । उन्होंने उसे थोड़ा रूकने का इशारा किया । वे घर के भीतर गए । शयनकक्ष में उनकी पत्नी सो रही थी । उन्होंने पत्नी की ओर देखा । उसके हाथ में अंतिम चिह्न के रूप में सोने के कंगन बचे हुए थे । माघ ने धीरे से अपना हाथ पत्नी के हाथ की ओर बढ़ाया । उन्होंने आहिस्ता से एक हाथ का कंगन निकाल लिया । वे वहाँ से पलटकर जाने लगे कि उनकी पत्नी जाग गई । वह चौंककर बोली कौन है? लज्जा महसूस करते माघ थोड़ी देर चुप ही रहे । यह भी तो नहीं कह सकते थे कि मैं हूँ तुम्हारा पति । क्योंकि उन्होंने जो काम किया था वह पति का काम नहीं था । यह तो चौर्य कर्म था । थोड़ी देर बाद उनके मुख से निकला- मैं चोर हूँ, देवी । पत्नी तब तक सब कुछ समझ गई थी । वह यह भी जान गई थी कि अवश्य ही महाकवि के सम्मुख कोई विकट स्थिति आ गई होगी ! उसे इस बात का अहसास हो गया था कि उन्होंने उसके हाथ के कंगन निकाला है, सो वह बोली 'महामना, पराई वस्तु लेने वाला व्यक्ति चोर हुआ करता है । मैं आपकी अर्द्धांगिनी हूँ । अतः आपने अपनी ही वस्तु ली है । इसलिए ऐसे शब्द कहकर मेरे मन को आहत नहीं करें ।' तब पति ने अवंतिका से आये ब्राह्मण की दयनीय दशा का वर्णन किया । पति के मुख से उनकी कथा-व्यथा सुनकर पत्नी और भी द्रवित हो गई । झट से दूसरे हाथ का कंगन भी निकाल कर देते हुए वह बोली 'आर्य पुत्री का विवाह है तो वह धूमधाम से ही होना चाहिए । इन कंगनों की हमसे अधिक जरूरत तो अवंतिका से आये विप्रवर को है । उनसे कहिए कि इस समय तो हम यही योगदान दे सकते हैं, बाहर बैठा ब्राह्मण पति-पत्नी के सभी संवाद सुन रहा था । माघ ने बाहर आकर दोनों कंगन ब्राह्मण को दे दिए । ब्राह्मण की आँखों में आँसू आ गए । वह उन्हें असीम आशीर्वाद देते हुए चला गया ।

साभार-पाथेय कण

वैवाहिक विज्ञापन

BIO - DATA

Name	: Dr. Harsha Shyamsunder Khade
Date of Birth	: 23 Sep. 1981 **Place :** Betul **Time :** 9:36 pm
Height	: 5.1" Fair. Slim **Caste :** Kunbi (Lonari)
Educational	: B. Sc. H, B.A.M.S., BA (Psychology)
Native Place	: Narkhed near Multai (M.P.)
Father's Name	: Shri Shyamsunder Narayanrao Khade (Eleetrical Engineer- Retired Ex Indian Navy)
Mother's Name	: Dr. Geeta Shyamsunder Khade- Ph.D. (Hindi Lit.)
Brother	: One Younger Brother's Name : Vaibhav Shyamsunder Khade BE (Mech.) MBA (Marketing), currently working Kirloskar Group in Pune.
Maternal Uncle	: Raju Lokhande Milanpur Betul (M.P.)
Address	: 138 Manish Layout, Nr Priyadarshini, B.Ed College Bhamti, Nagpur - 440022
Contact No.	: 0712-2289240
Cell No.	: Father - 9890416056, Mother - 9923488123

सुसंस्कारित, निर्व्यसनी, प्राइवेट सैक्टर में कार्यरत अन्तरजातीय वर चाहिए।

छपते - छपते

उत्तराखण्ड में आर्यसमाज द्वारा सेवाकार्य प्रारंभ

आर्य समाज ने आपदाओं के समय जो सेवाकार्य किया है वह इतिहास की धरोहर है। अपनी इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सक्रिय सहयोग से उत्तराखण्ड में सेवा कार्य प्रारंभ किया है।

आर्य समाज के सेवाभावी युवकों ने देहरादून तथा कोटद्वार में लंगर सेवा प्रारंभ की है।

सार्वदेशिक आ.प्र.सभा के प्रधान श्री आचार्य बलदेव जी, मंत्री श्री प्रकाश आर्य, प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री राजसिंह आर्य तथा महामंत्री श्री विनय ने आर्य समस्त आर्यों से निवेदन किया है कि आटा, दाल, चांवल, घी, तेल, दूध के पैकेट, बिस्कुट, पानी की बोतलें आदि 15, हनुमान रोड, दिल्ली में भिजवाने की कृपा करें। धन सार्वदेशिक सभा के पंजाब व सिंध बैंक के खाता क्र. 09481000000276 व दिल्ली आ.प्र. के खाता क्र. केनरा बैंक खाता क्र. 910010008984897 में जमा करवाया जा सकता है।

सार्वदेशिक आ.प्र.सभा ने 50,000 रूपये देकर राहत कोष स्थापित कर दिया है।

.....***.....

प्रति, _____

_____

डॉ. रामप्रकाश जी गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलाधिपति निर्वाचित

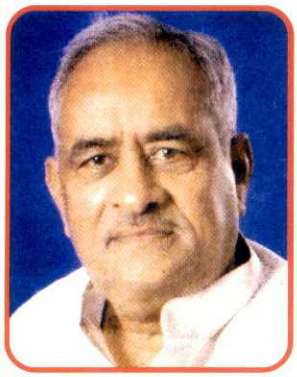

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार न केवल आर्य समाज अपितु शिक्षा जगत की एक अद्वितीय संस्था है । इस का संचालन पंजाब, हरियाणा तथा दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाएं करती हैं । पिछले कई वर्षों से आपसी विवादों के कारण इस पर ग्रहण सा लगा हुआ था । परन्तु अन्ततः उत्तराखण्ड के उच्चन्यायालय, नैनीताल के निर्णय से कुलाधिपति पद का निर्वाचन 20 मई 13 को सम्पन्न हुआ । डा.रामप्रकाश जी आर्य जगत के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं । उन्हें सर्व सम्मति से निर्वाचित घोषित किया गया । डा. राम प्रकाश जी का बहुमुखी व्यक्तित्व विशेष परिचय की अपेक्षा नहीं रखता है पर बताना आवश्यक है कि हरियाणा की धरती में जन्मे डा. साहब जहां वैज्ञानिक हैं, शिक्षा विद हैं वहां धर्म, संस्कृति एवं साहित्य क्षेत्र की भी एक अद्वितीय विभूति हैं । एक प्रखर वक्ता तथा विद्वानों तथा सामान्य जनता में लोकप्रिय होने के साथ प्रशासकीय क्षमताओं से भरे हुए, नेतृत्व प्रदान करने वाले, अनुपम व्यक्तित्व के धनी हैं । अपनी राजनैतिक दक्षता के कारण राज्यसभा सांसद भी हैं । ऐसे महानुभाव का गुरूकुल कागंडी, हरिद्वार, के शीर्ष पद पर निर्वाचन एक सुखद संयोग है । साथ ही यह स्वाभाविक रूप से कहा जा सकता है कि आर्य समाज के भविष्य के लिए अच्छे संकेत देने वाली ऐतिहासिक घटना है ।

निर्वाचन के उपरान्त डा. रामप्रकाश जी के विश्व विद्यालय पहुंचे । जहां यज्ञ करने के उपरान्त उन्होंने अपना पदभार ग्रहण किया । डा. रामप्रकाश जी ने अपने विचार प्रगट करते हुए कहा "विश्वविद्यालय के कार्य को यज्ञ के ब्रह्मा की तरह निभाने का प्रयत्न करूंगा ।" आपने कहा कि वे विश्वविद्यालय के खराब हुए सिस्टम को सुधारेगें । आपने तीनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं, शैक्षाणिक वर्ग के लोगों तथा कर्मचारियों को मिल कर कार्य करने की प्ररेणा दी । आपने आर्य सिद्धातों के पालने, अंग्रेजी के हावी न होने आदि बातें भी कहीं । आपने इशारा किया कि हमारे मतभेद हो सकते हैं पर मनभेद नहीं होना चाहिए । इस अवसर पर ब्रह्मचारी राजसिंह, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य विजय पाल, प्रधान, हरियाणा सभा, महाशय धर्मपाल, आदि ने अपने विचार प्रगट किए । समारोह में उत्तराखण्ड संस्कृत वि.वि.के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, आ.प्र.सभा गुजरात के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री धर्मपाल आर्य, आ.प्र. सभा उत्तराखण्ड के उपप्रधान श्री विनय विद्यालंकार आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही । कुलपति, डा.स्वतंत्र कुमार ने स्वागत व धन्यवाद प्रदान किया । सभा का संचालन कुल सचिव प्रो.ए.के. चोपड़ा द्वारा किया गया ।

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ तथा 'आर्य सेवक' परिवार की ओर से शतशः बधाईयां स्वीकार हों ।

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा,
मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर, फोनः 0712–2595556 द्वारा उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, फोन : 0761–4035487